mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-94 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
07 अप्रैल 2025 सोमवार

दैनिक **मीडियाऑडीटर**

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

अयोध्या पहुंचकर ...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

भारत ने चलाया ऑपरेशन ब्रह्मा, म्यांमार भिजवाया 31 टन सामान

म्यांमार (एजेंसी)। भारत ने म्यांमार में आए भूकंप से प्रभावित लोगों की मदद के लिए 31 टन और राहत सामग्री भेजी है। इसमें भारतीय सेना के 'फील्ड अस्पताल' के लिए जरूरी सामान भी शामिल है। यह सहायता 'सी-17 ग्लोबमास्टर' से भेजी गई। इस संबंध में एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि विमान ने रविवार सुबह गाजियाबाद के हिंडन वायुसेना स्टेशन से उड़ान भरी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया और कुछ तस्वीरें भी साझा कीं। उन्होंने पोस्ट में लिखा, ''ऑपरेशन ब्रह्मा' के तहत सी-17 विमान 31 टन मानवीय सहायता के साथ मांडले के लिए

रवाना हुआ, जिसमें भारतीय सेना की फील्ड अस्पताल इकाई के लिए जरूरी सामान भी शामिल है।'' पिछले सप्ताह म्यांमार में 7.7 तीव्रता का भूकंप आने से 3,000 से अधिक लोगों की मौत हो गई। भारत ने भूकंप से हुई तबाही के बाद 'ऑपरेशन ब्रह्मा' नाम से राहत अभियान शुरू किया था। इस बीच, भारतीय नौसेना के प्रवक्ता ने बताया कि 405 टन चावल सहित 442 टन राहत सामग्री लेकर 'आईएनएस घड़ियाल' शनिवार सुबह यांगून पहुंच गया। उन्होंने कहा कि भारतीय राजदूत अभय ठाकुर ने राहत सामग्री यांगून क्षेत्र के मुख्यमंत्री यू सोई थीन को सौंपी। म्यांमार में स्थित भारतीय दूतावास ने इससे संबंधित तस्वीरों को भी शेयर किया है।

जापान में दुर्घटनाग्रस्त होकर समुद्र में गिरा एंबुलेंस हेलीकॉप्टर, 3 लोग लापता

टोकियो (एजेंसी)। जापान में एक एंबुलेंस हेलीकॉप्टर दुर्घटना का शिकार होकर अचानक समुद्र में गिर गया। इससे उसमें सवार 6 में से 3 लोग लापता हो गए हैं, जिनकी तलाश की जा रही है। बताया जा रहा है कि यह हादसा जापान के दक्षिणपश्चिम हिस्से में रविवार को हुआ, जहां एक मरीज को लेकर जा रहा चिकित्सा हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होकर समुद्र में गिर गया। इसमें कुल 6 लोग सवार थे। इनमें से तीन लापता हो गये हैं। जापान के तटरक्षक बल ने यह जानकारी दी। तटरक्षक बलों ने बताया कि इस

हेलीकॉप्टर में रोगी के अतिरिक्त एक डॉक्टर, नर्स, पायलट, हेलीकॉप्टर मैकेनिक और रोगी की देखभाल करने वाला एक व्यक्ति सवार थे। जापान तट रक्षक बल के एक अधिकारी ने अपनी पहचान उजागर नहीं करने की शर्त पर बताया कि बल ने तीन लोगों को बचाया जिन्हें (इस हादसे के कारण) 'हाइपोथर्मिया' हो गया यानी उनके शरीर का तापमान असामान्य रूप से गिर गया था, लेकिन वे होश में थे। जापानी तटरक्षकों ने दुर्घटना के तुरंत बाद तत्परता दिखाते हुए 3 लोगों को बचा लिया। इन तीनों के शरीर में पानी भर गया था। मगर उनको तत्काल चिकित्सा के लिए ले जाया गया। तटरक्षकों ने कहा कि जिन लोगों को बचाया गया है उनकी पहचान नहीं हो पायी है। हादसे की वजह का भी पता नहीं चल पाया है। तटरक्षक बल ने बचाव अभियान के तहत इलाके में दो विमानों एवं तीन जहाजों को लगाया है। तटरक्षक बल के मुताबिक यह हेलीकॉप्टर नागासाकी के एक हवाई अड्डे से फुकुओका स्थित एक अस्पताल जा रहा था।

'गले में पट्टा, कुत्तों की तरह बर्ताव?, कर्मचारियों को ऐसी खौफनाक सजा, कांप जाएगी रूह

केरल (एजेंसी)। केरल में एक कंपनी ने अपने कर्मचारियों को ऐसी सजा दी है, जिसमें कंपनी ने क्रूरता की हदें पार कर दी है। इस उत्पीड़न का वीडियो वायरल होने के बाद, केरल के श्रम मंत्री वी शिवनकुट्टी ने पूरी घटना की जांच रिपोर्ट मांगी है। वीडियो काफी सेंसटिव है, इसलिए हम उसे नहीं दिखा रहे हैं। इस मामले में मंत्री ने स्पष्ट किया है कि

यह ऐसी घटना है जो नहीं होनी चाहिए थी इसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इस तरह का उत्पीड़न दोबारा नहीं होना चाहिए। एर्नाकुलम श्रम अधिकारी को जांच कर रिपोर्ट सौंपने का काम सौंपा गया है। जांच रिपोर्ट के आधार पर अन्य कदम उठाए जाएंगे। केरल की जिस कंपनी ने अपने कर्मचारियों को ऐसी क्रूर सजा दी है वह बीस वर्षों से कलूर में काम कर रही है। कंपनी के मालिक ने टारगेट पूरा नहीं करने वाले कर्मचारियों पर अमानवीय और क्रूर अत्याचार किया। कर्मचारियों को ऐसी यातना दी गई है, जिसे देखकर आप भी सहम जाएंगे। कर्मचारियों को कुत्ते की तरह उनके गले में बेल्ट बांधकर घुमाया गया, जानवरों की तरह ही पानी पीने को कहा गया और कुत्ते की ही तरह जमीन पर पड़े सड़े हुए फल चाटने को कहा गया। जानकारी के मुताबिक ये क्रूरता कंपनी में मार्केटिंग के कर्मचारियों पर की जाती है जो उत्पाद बेचने के लिए घरों में आते हैं। टारगेट पूरा नहीं करने वाले कर्मचारियों को पैंट उतारकर एक-दूसरे के गुप्तांग पकड़ने, कमरे में कुत्ते की तरह पेशाब करने, किसी का चबाया हुआ फल उठाकर थूकने और फर्श पर पड़े सिक्कों को चाटने जैसे अत्याचार किए जाते हैं। टारगेट पूरा नहीं करने वाले कर्मचारियों से अगले दिन टारगेट पूरा करवाने के लिए यह तरीका अपनाया जाता है।

तमिलनाडु के दौरे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा

सुशासन की प्रेरणा राष्ट्र निर्माण का बड़ा आधार

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज तमिलनाडु के दौरे पर हैं। रामनवमी के अवसर पर पीएम मोदी ने रामेश्वरम के रामनाथस्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके पहले उन्होंने भारत के पहले वर्टिकल लिफ्ट समुद्री ब्रिज का उद्घाटन किया। यहां पहुंचने पर पीएम मोदी ने कहा कि रामनवमी के अवसर पर रामेश्वरम आकर बहुत खुश हूं। सुशासन की प्रेरणा राष्ट्र निर्माण का बड़ा आधार है। तमिलनाडु के लोगों के लिए कनेक्टिविटी को मजबूत करने और %जीवन को आसान बनाने% के उद्देश्य से विकास कार्यों के शुभारंभ पर बोलते हुए पीएम मोदी ने कहा कि रामनवमी के विशेष अवसर पर रामेश्वरम आकर बहुत ज्यादा खुश हूं। पीएम मोदी ने कहा कि आप नॉर्थ में देखेंगे तो जम्मू कश्मीर में दुनिया के सबसे ऊंचे रेल ब्रिज में से एक चिनाब ब्रिज बना है। पश्चिम में जाएंगे तो मुंबई में देश का सबसे लंबा सी ब्रिज अटल सेतु बना है। पूर्व में जाएंगे तो असम के बोगीबील ब्रिज के

दर्शन होंगे। अब दक्षिण में आते हैं तो दुनिया के गिने-चुने वर्टिकल लिफ्ट ब्रिज में से एक पंबन ब्रिज का निर्माण पूरा हुआ है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज श्रीराम-नवमी का पावन पर्व है। अब से कुछ समय पूर्व अयोध्या में भव्य राम मंदिर में रामलला का सूर्य की किरणों ने भव्य तिलक किया है। भगवान श्रीराम का जीवन, उनके राज्य से मिलने वाली सुशासन की प्रेरणा राष्ट्र निर्माण का बड़ा आधार है। पीएम मोदी ने कहा कि तमिलनाडु विकसित भारत या विकसित भारत की ओर बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मेरा मानना ??है कि तमिलनाडु की क्षमता का एहसास होने पर देश का समग्र विकास बेहतर होगा। पिछले दशक में केंद्र सरकार ने 2014 से पहले की अवधि की तुलना में तमिलनाडु को तीन गुना अधिक धन आवंटित किया है। इसके साथ ही पीएम मोदी ने कहा कि जब इंडी गठबंधन सत्ता में था, तब मोदी सरकार ने तमिलनाडु को तीन गुना धन मुहैया कराया था।

रेस्क्यू की गई 35 साल की महिला

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एक 35 साल की महिला को रेस्क्यू किया है। इस महिला को कथित तौर पर तस्करी कर जीबी रोड रेड-लाइट इलाके में वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया गया था। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वेश्यालय की व्यवस्था देखने वाले को भी मौके से गिरफ्तार किया गया है।

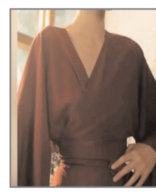

पुलिस के अनुसार, पश्चिम बंगाल की मूल निवासी महिला को नौकरी का वादा करके करीब तीन महीने पहले दिल्ली लाया गया था, लेकिन इसके बजाय उसे अवैध व्यापार में बेच दिया गया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि दिल्ली पहुंचने के बाद उसका अपने परिवार से संपर्क टूट गया, लेकिन करीब 10 दिन पहले वह अपने भाई को फोन करके अपनी स्थिति के बारे में बताने में कामयाब रही। उसके भाई ने एक गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) की मदद से राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) से संपर्क किया। अधिकारी ने बताया, %एक गुप्त सूचना के आधार पर, पुलिस की एक टीम ने बचाव अभियान शुरू किया और 5 अप्रैल को छापेमारी की। उसे जीबी रोड स्थित एक वेश्यालय से बचाया गया और उसके प्रबंधक को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया।%

दिल्ली के शाहीन बाग इलाके में लगी आग, मचा हड़कंप

दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। गर्मियों का सीजन आते ही आग लगने की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। इस बीच दिल्ली के शाहीन बाग इलाके में रविवार शाम को आग लगने का मामला सामने आया है। यहां शाहीन बाग इलाके के एक खाली प्लॉट में आग लग गई। आग लगने के बाद से दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंच गई हैं। आग पर काबू पाने का काम किया जा रहा है। इसके अलावा दिल्ली के ही वजीराबाद इलाके में भी पुलिस मालखाने में रविवार को आग लग गई थी। इस घटना में 150 से अधिक वाहन जलकर राख हो गए। दरअसल, पूरा मामला दिल्ली के शाहीन बाग इलाके का है। यहां शाहीन बाग इलाके के एक खाली प्लॉट में रविवार की शाम को अचानक आग लग गई। आग लगने की वजह से इलाके में हड़कंप मच गया। आनन-फानन में आग लगने की सूचना दमकल विभाग को दी गई। सूचना मिलने के बाद दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंच गई हैं। वहीं आग पर काबू पाने का प्रयास किया जा रहा है। आग की लपटें इतनी भयावह हैं कि दूर से ही इन्हें देखा जा सकता है। फिलहाल इस मामले में विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा की जा रही है। ऐसे ही एक अन्य मामले में रविवार को ही उत्तर-पूर्वी दिल्ली के वजीराबाद इलाके में स्थित एक

पुलिस %मालखाना% में आग गई गई। इस घटना में 150 से अधिक वाहन जल गए। पुलिस ने बताया कि आग तड़के करीब 4~30 बजे लगी और इस बारे में सूचना मिलने पर दमकल विभाग की कुल सात गाड़ियां मौके पर पहुंची। पुलिस ने बताया कि आग पर सुबह छह बजकर 20 मिनट तक काबू पा लिया गया। एक पुलिस सूत्र के अनुसार, आग में 150 से अधिक वाहन जलकर खाक हो गए, जिसमें चार पहिया और दो पहिया वाहन शामिल थे। फिलहाल आग लगने की वजह का पता लगाया जा रहा है।

स्टालिन ने पीएम से मिलने का मांगा समय

सौंपेंगे ज्ञापन, परिसीमन को लेकर की बात

चेन्नई (एजेंसी)। तमिल को लेकर चल रहे भाषा विवाद के बीच पीएम मोदी तमिलनाडु के दौरे पर हैं। यहां उन्होंने कई परियोजनाओं की शुरुआत भी की। हालांकि उनके कार्यक्रम में तमिलनाडु के सीएम एम के स्टालिन शामिल नहीं हुए। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने रविवार को कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को प्रस्तावित परिसीमन प्रक्रिया को लेकर राज्य के लोगों की आशंकाओं को दूर करना चाहिए। सीएम स्टालिन ने एक आधिकारिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि संसद में एक प्रस्ताव पारित किया जाए ताकि तमिलनाडु के अधिकारों पर अंकुश नहीं लगे।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने लोकप्रिय पर्यटन स्थल के लिए कई परियोजनाओं का उद्घाटन करने और नई योजनाओं की घोषणा की। इसके बाद सभा को संबोधित करते हुए सीएम स्टालिन ने कहा कि उन्होंने प्रस्तावित परिसीमन से जुड़ी चिंताओं पर ज्ञापन सौंपने के लिए प्रधानमंत्री से मिलने का समय मांगा है। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा, ''हमने परिसीमन पर ज्ञापन प्रस्तुत करने के लिए समय मांगा है। चूंकि मैं इस सरकारी समारोह में भाग ले रहा हूं, इसलिए मैंने उन्हें उनकी सभा में भाग लेने में असमर्थता से अवगत करा दिया है। मैंने इस कार्य के लिए अपने मंत्रियों- टी थेन्नारसु और राजा कन्नप्पन को भेजा है। इस सभा के माध्यम से मैं प्रधानमंत्री से परिसीमन की आशंकाओं को दूर करने का अनुरोध करता हूं।''

सीएम स्टालिन ने कहा, ''आपको (मोदी को) यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि इस संबंध में संसद में एक प्रस्ताव पारित हो। इससे (परिसीमन से) संसदीय सीट में कमी आएगी, इसलिए इसके बारे में पूछना हमारा अधिकार है। साथ ही यह हमारे भविष्य के लिए चिंता का विषय भी है।'' उन्होंने कहा, ''पुडुचेरी को मिलाकर यहां 40 संसदीय सीट होंगी। लेकिन (केंद्र में) सत्तारूढ़ भाजपा सरकार परिसीमन के जरिये हमारी आवाज दबाने की कोशिश कर रही है।''

अहमदाबाद में 8-9 अप्रैल को होगा कांग्रेस का अधिवेशन

पुराना गौरव बहाल करने पर रहेगा जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सचिन पायलट का कहना है कि कांग्रेस पार्टी ने कांग्रेस ने लड़ने का जज्बा या जोश नहीं खोया है, बदलाव धीरे-धीरे होता है। अहमदाबाद में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के अधिवेशन से पहले कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने एक इंटरव्यू में यह बात कही। उन्होंने कहा कि पार्टी में पीढ़ीगत बदलाव हो रहा है और युवा नेता उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रक्रिया में जवाबदेही के साथ-साथ विचारधारा को मजबूत करना मुख्य मंत्र होगा।

सचिन पायलट ने कहा कि गुजरात में हो रहा एआईसीसी अधिवेशन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ऐसे समय में हो रहा है जब ध्यान संबंधित राज्य में पार्टी को मजबूत करने और वहां इसका पुराना गौरव बहाल

करने पर है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने यह भी कहा कि पार्टी भले ही लोकसभा चुनावों के बाद कुछ राज्यों में चुनाव हार गई हो, लेकिन उसने लड़ने का जज्बा या जोश नहीं खोया है। यह पूछे जाने पर कि क्या पार्टी में पीढ़ीगत बदलाव का समय आ गया है, पायलट ने कहा कि कोई भी बदलाव रातोंरात नहीं होता बल्कि धीरे-धीरे होता है। उन्होंने कहा, ''पार्टी पिछड़ों, युवाओं, महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अल्पसंख्यकों की स्थिति को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये वे वर्ग हैं जो हमारी आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा हैं और इन वर्गों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व महत्वपूर्ण है।'' पायलट ने कहा, ''पार्टी के मंच पर हमने उदयपुर घोषणापत्र को स्वीकार किया और उसका पालन कर रहे हैं। पार्टी की सभी नियुक्तियों में हम उस घोषणापत्र को ध्यान में रख रहे हैं। (पीढ़ीगत) बदलाव अपने आप हो रहा है, कई लोग अब नेतृत्व की भूमिकाएं संभाल रहे हैं चाहे वह संसद के भीतर हो या संसद के बाहर, राज्यों में हो या एआईसीसी में नए लोगों की नियुक्ति हो, युवा अब नेतृत्व की भूमिकाएं संभाल रहे हैं।

मनाली घूमने के लिए नहीं थे पैसे, 8 नाबालिग लड़कों ने लूट ली दुकान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में 8 नाबालिग लड़कों ने धारदार हथियार दिखाकर एक दुकान लूट ली। जांच में सामने आया कि इन लड़कों को घूमने के लिए मनाली जाना था, लेकिन इनके पास पैसे नहीं थे। ऐसे में इन लड़कों ने दुकान लूट ली। घटना का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है, जिसमें दुकान के बाहर खड़े नाबालिग लड़के नजर आ रहे हैं। आरोपी

लड़कों ने जनरल स्टोर की दुकान पर लूट की वारदात को अंजाम दिया। जानकारी के मुताबिक आरोपियों ने कुल 30 हजार रूपये लूटे हैं। घटना दिल्ली के सुल्तानपुरी इलाके की है, जहां दिनदहाड़े दुकान में लूट से सनसनी फैल गई। घटना के बाद पुलिस ने 4 नाबालिग लड़कों को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, दो लड़के हिरासत में हैं। सीसीटीवी वीडियो में देखा जा सकता है कि किराने की दुकान पर अचानक से छह-सात लड़के पहुंचते हैं। दुकान के अंदर घुसते ही पहला लड़का अपनी जेब में रखा धारदार हथियार निकालकर दुकानदार को धमकाना शुरू कर देता है।

भारत के पहले वर्टिकल लिफ्ट समुद्री ब्रिज का पीएम मोदी ने किया उद्घाटन

नई दिल्ली (एजेंसी)। रामनवमी के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज तमिलनाडु का दौरे पर हैं। इस दौरान पीएम मोदी ने बहुप्रतीक्षित न्यू पंबन रेल ब्रिज का उद्घाटन किया है। जो भारत का पहला वर्टिकल लिफ्ट समुद्री पुल है। यह

● तमिलनाडु को प्रधानमंत्री मोदी ने दी सौगात

पुल मुख्य भूमि को रामेश्वरम द्वीप से जोड़ता है। ये तटीय बुनियादी ढांचे में कनेक्टिविटी और नवाचार का एक आधुनिक प्रतीक है। न्यू पंबन रेल ब्रिज के उद्घाटन के साथ ही पीएम मोदी ने रामेश्वरम-तांबरम (चेन्नई) नई ट्रेन सेवा को हरी झंडी भी दिखाई है।

करीब 2 किलोमीटर है लंबा ब्रिज: 700 करोड़ रुपये से ज्यादा की लागत से बना 2.08 किलोमीटर लंबा यह पुल 99 स्पैन से लैस है। इसमें अत्याधुनिक 72.5 मीटर वर्टिकल लिफ्ट सेक्शन है। यह लिफ्ट मैकेनिज्म इसे 17 मीटर तक ऊपर उठने की अनुमति देता है, जिससे जहाजों को गुजरने में मदद मिलती है। साथ ही ट्रेन की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित होती है।

खास तरह से किया गया डिजाइन: समुद्र में बने करीब 2 किलोमीटर लंबे पुल को स्टेनलेस स्टील सुदृढीकरण, जंग-रोधी पॉलीसिलोक्सेन कोटिंग और पूरी तरह से वेल्डेड जोड़ों के साथ डिजाइन किया गया है। यह पुल लंबे समय तक टिकाऊ है। इसकी देखभाल भी कम से कम करनी पड़ती है।

सड़क परियोजनाओं की रखेंगे आधारशिला: इस पुल के उद्घाटन के बाद लगभग पीएम मोदी रामेश्वरम में पवित्र रामनाथस्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना करने जाएंगे। इसके बाद पीएम मोदी का 8,300 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की रेल और सड़क परियोजनाओं की आधारशिला रखने और उन्हें राष्ट्र को समर्पित करने का कार्यक्रम है।

नेशनल हाईवे का विस्तार: इन विकासों में प्रमुख राजमार्ग (नेशनल हाईवे) विस्तार शामिल हैं। इनका उद्देश्य तमिलनाडु में कनेक्टिविटी में सुधार करना है। एनएच-40 जो कि 28 किमी वालाजापेट-रानीपेट खंड को चार लेन का बनाना है। एनएच-332 जो कि 29 किमी विलुप्पुरम-पुदुचेरी खंड को चार लेन का बनान है। एनएच-32 जो कि 57 किमी पूंडियनकुप्पम-सत्तनाथपुरम खंड को समर्पित करना है। एनएच-36 जो कि 48 किमी चोलापुरम-तंजावुर खंड को समर्पित करना है।

रामेश्वरम का सांस्कृतिक महत्व और पीएम मोदी: तमिलनाडु के दौरे के दौरान पीएम मोदी न केवल रामेश्वरम के सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित कर रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि रामायण के अनुसार, यहीं पर राम सेतु का निर्माण किया गया था। पीएम मोदी ने अपनी इस यात्रा से आधुनिक बुनियादी ढांचे के लिए एक दृष्टिकोण भी प्रदर्शित किया है, जो परंपरा को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ता है।

गोविंदपुरा में पेयजल की समस्या दूर करने बनेंगी 9 पानी की टंकियाँ: राज्य मंत्री गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण, विमुक्त, घुमन्तु और अर्द्ध घुमन्तु कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने ग्रीष्म ऋतु में पेयजल आपूर्ति और अन्य विषयों पर जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक की। राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि गोविंदपुरा क्षेत्र में पेयजल की समस्या दूर करने के लिए पानी की 9 नई टंकियों का निर्माण कराया जाएगा, जिसमें 10 लाख लीटर तक पानी भंडारित किया जा सकेगा। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने जनप्रतिनिधियों से उनके क्षेत्र की कार्य योजना और समस्याओं की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को समय-सीमा में सभी कार्य पूरे करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में दौरा करने पर अगर जनता पेयजल समस्या से जूझती नजर आई तो अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने पानी की समस्या वाली कॉलोनियों में बल्क कनेक्शन देने और सप्लाई की समय सीमा बढ़ाने के निर्देश भी दिए हैं। उन्होंने ये भी कहा कि जहां अति आवश्यक हो, वहां पानी की नई पाइप लाइन डाली जाए। बैठक में पार्षद श्रीमती छाया ठाकुर, श्रीमती ममता विश्वकर्मा, श्रीमती अर्चना परमार, श्रीमती उर्मिला मौर्य, श्री विकास पटेल, श्री राजू राठौर, श्री नीरज सिंह, श्री शिवलाल मकोरिया, श्री रामबाबू पाटीदार, श्री संतोष ग्वाला, श्री वी. शक्ति राव, श्री नीलेश गौर, श्री लवकुश यादव, श्रीमती मोनिका ठाकुर, श्री संजय सबनानी, श्री एल.के. खरे और श्री उदित गर्ग मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री 8 अप्रैल को जनता को समर्पित करेंगे विवेकानंद नीडम आरओबी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ग्वालियर में विवेकानंद नीडम के समीप नवनिर्मित आरओबी (रेलवे ओवर ब्रिज) 8 अप्रैल को जनता को समर्पित करेंगे। इसके साथ ही इस आरओबी से विधिवत आवागमन शुरू हो जाएगा। आरओबी की सुविधा जल्द से जल्द शहरवासियों सहित जिले की जनता को उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देश पर आरओबी पर विद्युतीकरण सहित रोशनी के लिए पोल व रेडियम लगाना, रोड फर्निशिंग एवं निर्धारित मानकों के अनुरूप सुगम यातायात के लिए शेष काम युद्ध स्तर पर पूरे किए जा रहे हैं। इस आरओबी के शुरू होने पर लश्कर, कम्पू, आमखो इत्यादि क्षेत्र के निवासी नाका चंद्रबदनी से विवेकानंद नीडम होते हुए कलेक्ट्रेट पहुँच सकेंगे। साथ ही आगरा-झाँसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर सीधे जा सकेंगे। इससे समय की बचत के साथ दूरी भी कम तय करनी पड़ेगी।

मंत्री डॉ. विजय शाह की अध्यक्षता में जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति कल्याण की दो दिवसीय कार्यशाला 7 एवं 8 अप्रैल को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. विजय शाह की अध्यक्षता में जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति कल्याण विभाग की दो दिवसीय प्रशिक्षण सह-उन्मुखीकरण कार्यशाला 7 एवं 8 अप्रैल को आयोजित की गई है। प्रशासन अकादमी भोपाल में आयोजित प्रशिक्षण सह उन्मुखीकरण कार्यशाला में संभागीय एवं जिला अधिकारी भाग लेंगे। प्रशिक्षण कार्यशाला में मैदानी स्तर पर तैनात अधिकारियों को विभाग के दैनंदिनी कार्यों के साथ विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन में आई.टी के उपयोग एवं ई-ऑफिस प्रशिक्षण के रूप में एम.पी. टॉस्क पोर्टल के लाइव मॉड्ल्स का प्रशिक्षण शामिल किया गया है। प्रशिक्षण कार्यशाला के दूसरे दिन विधि संगत प्रकरणों, अनुदान, सी.एम. हेल्प लाइन प्रकरणों के निराकरण एवं विशेष प्रकरणों में खात्मे एवं लेखा विषयों पर वरिष्ठ अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा सत्र को संबोधित किया जाएगा। छात्रावासों के नियम, छात्रवृत्ति, अत्याचार अधिनियम एवं अन्य विषय विशेष पर वरिष्ठ अधिकारी संबोधित करेंगे।

किसान गेहूँ विक्रय के लिए 9 अप्रैल तक करा लें पंजीयन-कृषि मंत्री कंषाना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि राज्य सरकार किसानों के हित में काम कर रही है। किसान भाइयों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ विक्रय के लिए परेशान होने की जरूरत नहीं है। राज्य सरकार ने रबी विपणन वर्ष 2025-26 में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये पंजीयन की अवधि 9 अप्रैल 2025 तक बढ़ा दी है। जिन किसानों ने अभी तक अपना पंजीयन नहीं कराया है, वे 9 अप्रैल तक पंजीयन जरूर करा लें। मंत्री श्री कंषाना ने बताया कि गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रूपये है और राज्य सरकार द्वारा 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस दिया जा रहा है। इस तरह गेहूँ की खरीदी 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से की जा रही है।

भोपाल में फिल्म 'फुले' का समर्थन

भोपाल। महिला शिक्षा और सामाजिक न्याय की प्रेरणादायक कहानी पर आधारित फिल्म फुले को समर्थन देने के लिए बहुजन इंटेलेक्ट ने एक सिनेमा जागरूकता अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत भोपाल में 6 अप्रैल को एक शांतिपूर्ण पैदल मार्च का आयोजन किया जा रहा है।

डगवेल रिचार्ज विधि से होगा भूजल पुनर्भरण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए प्रदेश सरकार ने जल गंगा संवर्धन अभियान में भूजल पुनर्भरण के लिए डगवेल रिचार्ज विधि अपनाने का निर्णय लिया है। इसमें राज्य में एक लाख कुओं को रिचार्ज करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने इस संबंध में विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए हैं। यह पहल विशेष रूप से कृषकों को रबी की फसलों की सिंचाई हेतु स्थायी जल स्रोत उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होगी। डगवेल रिचार्ज विधि उथले जलभृत के पुनर्भरण का एक सरल और सुलभ उपाय है। इस विधि में वर्षा जल को रिचार्ज पिट/फिल्टर के माध्यम से कुंओं में प्रवाहित किया जाता है, जिससे भूगर्भीय जल स्तर में वृद्धि होती है। यह विधि भूजल स्तर बनाए रखने में मदद करती है और लंबे समय तक पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। इस योजना में उन कुओं का चयन किया जाएगा जिनमें जल स्तर 10 मीटर से अधिक है और जो बरसात के बाद दिसंबर-जनवरी तक जल युक्त रहते हैं। मनरेगा अंतर्गत निर्मित कपिलधारा कुओं को भी इस योजना में सम्मिलित किया जा सकता है, यदि उनमें पूर्व में रिचार्ज पिट का निर्माण नहीं हुआ है। रिचार्ज पिट/फिल्टर का निर्माण कुंए से 3 से 6 मीटर की दूरी पर किया जाएगा। इसके लिए विशेष संरचना बनाई जाएगी जिसमें विभिन्न आकार के पत्थरों और मोटे रेत की परतें बिछाई जाएंगी, ताकि जल शुद्धिकरण और बहाव में कोई बाधा न आए। पाइप लाइन से यह पानी सीधे कुंए में पहुंचेगा और वहां से प्राकृतिक रूप से जलस्तर को पुनर्भरित करेगा। निजी कुओं की सफाई और रखरखाव की जिम्मेदारी संबंधित हितग्राही की होगी, वहीं सार्वजनिक कुओं की देखरेख ग्राम पंचायतें करेंगी। इससे जनभागीदारी सुनिश्चित होगी और जल संरक्षण की भावना जन-जन तक पहुंचेगी। राज्य सरकार का यह प्रयास जल संकट से जूझते ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी समाधान के रूप में उभरेगा। यह अभियान किसानों के जीवन को समृद्ध बनाने में सहायक होगा। जल पुनर्भरण भू-जल संवर्धन और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी सहायक सिद्ध होगा।

सरोजिनी नायडू स्नातकोर महाविद्यालय में छात्राओं के लिए लगाया गया स्वास्थ्य जागरूकता और परीक्षण शिविर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शासकीय सरोजिनी नायडू कन्या महाविद्यालय में बालिकाओं के लिए स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 150 से अधिक छात्राओं ने जांच कराई।

शिविर में 40 से अधिक महाविद्यालयीन स्टाफ की भी जांच की गई। शिविर में स्वास्थ्य विभाग की ओर से जांच एवं चिकित्सकीय परामर्श के अलावा आभा आईडी भी बनाई गई। शिविर में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों एवं योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। छात्राओं के निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण के लिए

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दीप्ति श्रीवास्तव, राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. मंजुला बिस्वास सहित विभिन्न शैक्षणिक विभागों के विभाग अध्यक्षों ने स्वास्थ्य विभाग को धन्यवाद दिया। स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में डॉ. पुष्पा देवी, डॉ. निर्मल मेवाड़ा, नर्सिंग ऑफिसर जॉर्जीना मंडलोई, नीतू यदुवंशी, मल्टी टास्क वर्कर रूपेश यादव ,प्रतीक्षा जाधव, प्रदीप ऊइके द्वारा सेवाएं दी गईं। सीएमएचओ डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि शहरी क्षेत्र की आउटरीच गतिविधियों के तहत बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और स्वास्थ्य जांच के लिए विशेष शिविर लगाया गया।

निशातपुरा स्टेशन शुरू होने के बाद मालवा नहीं आएगी भोपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में पॉड होटल को यात्रियों से अच्छा रिस्पॉन्स मिला है और इसी को देखते हुए अब इसे रानी कमलापति संत हिरदाराम नगर और सीहोर में भी शुरू किया जाएगा। निशातपुरा रेलवे स्टेशन भी बनकर तैयार हो चुका है और जल्द ही यहां से मालवा एक्सप्रेस को रवाना किया जाएगा। बता दें कि 5 अप्रैल को भोपाल स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 6 पर स्थित बिल्डिंग में पॉड होटल की शुरुआत की गई है। जिसका उद्घाटन डीआरएम देवाशीष त्रिपाठी और सांसद आलोक शर्मा ने किया।

भोपाल रेलवे स्टेशन पर शुरू किए गए पॉड होटल को यात्रियों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। इसे ध्यान में रखते हुए अब यह सुविधा रानी कमलापति स्टेशन (क्राक्स), संत हिरदाराम नगर और सीहोर स्टेशन पर भी उपलब्ध कराई जाएगी। इन होटलों में यात्रियों के ठहरने के साथ-साथ सिर्फ 200 रुपए में भरपेट भोजन की व्यवस्था भी होगी। पॉड होटल, जिसे कैप्सूल होटल भी कहा जाता है, जापान से प्रेरित अवधारणा है। इसमें छोटी-छोटी कैप्सूल इकाइयों में यात्रियों को ठहरने की सुविधा दी जाती है, जो कम जगह में उच्च श्रेणी की सुविधाएं प्रदान करती हैं। भोपाल रेलवे स्टेशन पर यह सुविधा यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए शुरू की जा रही है, जिसकी योजना 20 अक्टूबर 2019 को शुरू हुई थी और लगभग 6 साल बाद यह यात्रियों के लिए उपलब्ध हो रही है। सांसद आलोक शर्मा ने जानकारी दी कि निशातपुरा रेलवे स्टेशन पूरी तरह से बनकर तैयार हो चुका है। उन्होंने हाल ही में केंद्रीय रेल मंत्री से आग्रह किया है कि इसके उद्घाटन की तिथि जल्द घोषित की जाए।

एमपी बोर्डदसवीं-बारहवीं का रिजल्ट 10 मई तक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिमं) का हाई स्कूल और हायर सेकंडरी का रिजल्ट 10 मई तक घोषित किया जा सकता है। अब तक 45% से ज्यादा मूल्यांकन कार्य पूरा हो चुका है। आमतौर पर परीक्षा समाप्ति के 45 दिन में कॉपी चेकिंग का लक्ष्य रखा जाता है। मंडल की परीक्षाओं में इस बार लगभग 16.5 लाख परीक्षार्थी शामिल हुए थे। इन्होंने करीब एक करोड़ कॉपियां लिखीं। मंडल अधिकारियों ने बताया कि अब तक करीब 40 लाख से ज्यादा कॉपियां जांची जा चुकी हैं। अब भी भेजी जा रही कॉपी -मंडल की परीक्षा 25 मार्च को समाप्त हुई थी।

इसके बाद इन्हें मूल्यांकन केंद्रों पर शुक्रवार को भी भेजा गया। खास बात यह है कि मुख्य विषयों की कॉपियां जांचने का काम तेजी से चल रहा है। सिंधी में केवल एक परीक्षार्थी -मंडल के अधिकारियों ने बताया कि इस बार 10वीं में सिंधी भाषा की परीक्षा केवल एक ही परीक्षार्थी ने दी। इसी तरह गुजराती में भी लगभग 40 परीक्षार्थी और पंजाबी में 80 परीक्षार्थी शामिल हुए। ज्यादातर विद्यार्थियों ने तीसरी भाषा के रूप में हिंदी, इंग्लिश या उर्दू को चुना था।

उपनगर ग्वालियर के चहुँमुखी विकास में कोई कसर नहीं रहेगी - ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उपनगर ग्वालियर के चहुँमुखी विकास में कोई कोर कसर नहीं रहने दी जायेगी। उपनगर ग्वालियर में मूर्तरूप ले रहे विकास कार्यों से क्षेत्रवासियों को सुगम आवागमन और बेहतर बुनियादी सुविधाएं मिल रही हैं। प्रगति की यात्रा इसी प्रकार निरंतर जारी रहेगी। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह बात उपनगर ग्वालियर में लगभग तीन करोड़ 70 लाख रुपए से अधिक के विकास कार्यों के भूमि- पूजन के अवसर पर कही। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि आमजन को मूलभूत सुविधाओं का लाभ आसानी से मिले इसी दिशा में कार्य किया जा रहा है। उपनगर

ग्वालियर में स्वास्थ्य और शिक्षा में बेहतर कार्य किया गया है। सिविल हॉस्पिटल हजीरा एक प्राइवेट हॉस्पिटल की तरह सुविधा दे रहा है। शिक्षा नगर में स्मार्ट स्कूल बनकर तैयार है, जहां बच्चों को किसी प्राइवेट विद्यालय से अच्छी सुविधाओं के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी। शीघ्र ही इसका लोकार्पण किया जाएगा। पूर्व सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार की मंशानुरूप जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति को भी दिलाने का कार्य किया जा रहा है। ग्वालियर में विकास कार्य बहुत ही तेजी से किये जा रहे हैं। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने वार्ड 32, 3 व 4 में 3 करोड़ 70 लाख रुपए से अधिक के विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया।

वार्ड 32 में न्यू कुशालनगर की विभिन्न गलियों में सीसी रोड, श्रुति एंक्लेव में डामरीकरण, न्यू चंदन नगर की विभिन्न गलियों में सीसी रोड निर्माण, विभिन्न स्थानों पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सीसी सड़क निर्माण कार्य एवं रवि नगर पार्क। इसके साथ ही वार्ड 3 में डीआरपी लाइन पेट्रोल पंप के बगल से स्कूल तक सीसी निर्माण कार्य एवं वार्ड 4 सदाशिव नगर की विभिन्न गलियों में सड़क एवं सीसी निर्माण कार्य किये जायेंगे।

जल संरक्षण के लिए निरंतर बढ़ रही है जन सहभागिता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जल संरक्षण अभियान देशभर में जन-आंदोलन बन चुका है। मध्यप्रदेश में चल रहे जल गंगा संवर्धन अभियान में जन सहयोग उमड़ रहा है। इसमें निरंतर जन सहभागिता बढ़ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन के माँ क्षिप्रा के तट रामघाट से 30 मार्च को प्रदेश स्तरीय जल गंगा संवर्धन अभियान की शुरुआत की थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि जल संरक्षण के लिए, जन भागीदारी जुटाने से स्पष्ट है कि प्रदेश प्रधानमंत्री श्री मोदी के 'जन सहयोग से जल संरक्षण' की मुहिम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेकर अग्रिम पंक्ति में आ गया है।

राज्य सरकार %खेत का पानी खेत में, गांव का पानी गांव में% के सिद्धांत पर जल संरक्षण की दिशा में अभियान चला रही है। इसे सफल बनाने के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान में वर्षा जल संचयन, पुराने जल स्रोतों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि राज्य सरकार का यह अभियान जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिए हैं कि वे जल संरक्षण से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता देकर अधिक से अधिक लोगों को अभियान से जोड़ें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा उज्जैन से प्रारंभ किये गये अभियान में जल संरक्षण, जल स्त्रोतों के पुनरुद्धार, भू-जल स्तर सुधार, पुराने कुओं-बावड़ियों के जीर्णोद्धार, जल स्त्रोतों की साफ-सफाई, पौध-रोपण, छोटी नदियों, तालाब जैसी जल संरचनाओं के संरक्षण करने के लिए चल रहे इस अभियान में अब जन सहयोग भी उमड़ने लगा है। उज्जैन जिला पंचायत सीईओ श्रीमति जयति सिंह के साथ जनपद पंचायत उज्जैन की टीम ने भी जन सहयोग से चिंतामण बावड़ी, गोठड़ा बावड़ी, राणावड़ बावड़ी और बामोरा बावड़ी की साफ-सफाई की। इंदौर जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान में जल संरक्षण की महत्ता जन-जन तक पहुँचाने के लिए धर्मगुरु भी जुड़ रहे हैं। धर्मगुरु अपने उपदेशों से जल की महत्ता जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। इनकी प्रेरणा से नागरिक श्रमदान कर बावड़ी, कुँओं और तालाबों को संवार रहे हैं। इन्दौर जिले के बरलाई जागीर गांव में चारभुजा नाथ मंदिर सांवेर के गुरु श्री आनंदाचार्य ने आश्रम के बटुकों के साथ पूजन-अर्चन किया। मंत्रोच्चार के साथ जल का पूजन भी किया गया। उन्होंने उपस्थित जनों को जल की महत्ता समझाते हुए कहा कि जल की एक-एक बूँद जीवनदायी होती है। हमारी धार्मिक मान्यताओं में भी जल का विशेष स्थान है। इसलिए सभी को मिलकर जल को सहेजने चाहिये। श्री आनंदाचार्य के आह्वान पर श्रद्धालुओं ने बरलाई जागीर की बावड़ी के लिये श्रमदान किया। उन्होंने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान, प्रदेश में जल की प्रचुर उपलब्धता और भावी पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है।

कब्रिस्तान की जमीन पर एमपी का पुलिस मुख्यालय

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संसद के दोनों सदनों से वक्फ संशोधन बिल 2025 पारित होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा- वक्फ संपत्तियों में सालों से गड़बड़ी हो रही थी। इससे खासतौर पर मुस्लिम महिलाओं और गरीबों को नुकसान हुआ। अब यह नया कानून पारदर्शिता बढ़ाएगा। गरीब पसमांदा मुस्लिमों के अधिकारों की रक्षा करेगा। पीएम मोदी ने वक्फ की जिन संपत्तियों में गड़बड़ी का जिक्र किया है, मध्यप्रदेश में इसके सैकड़ों उदाहरण हैं। वक्फ बोर्ड के मुताबिक, एमपी में वक्फ की 90 फीसदी प्रॉपर्टी विवादों में है। ये विवाद अलग-अलग तरह के हैं। वक्फ की कई जमीनों पर कब्जे और अतिक्रमण हैं, तो कई संपत्तियों पर सरकारी दफ्तरों का संचालन हो रहा है। एमपी का पुलिस मुख्यालय और कंट्रोल रूम समेत भोपाल की 47 सरकारी प्रॉपर्टी पर वक्फ बोर्ड दावा जताता है। इनके मामले कोर्ट में चल रहे हैं। साथ ही वक्फ बोर्ड को इन संपत्तियों से जितनी आय होना चाहिए, वो भी नहीं हो रही है। अब नए कानून से वक्फ की विवादित प्रॉपर्टी पर क्या असर पड़ेगा, किस तरह से ये मामले निपटाए जाएंगे, वक्फ की प्रॉपर्टी का कैसे इस्तेमाल हो रहा है, ये समझना है तो इसका सबसे जीवंत उदाहरण है वक्फ बोर्ड के मुख्यालय के पास बना यतीमखाना। इस यतीमखाने का संचालन दारुल शफकत सोसाइटी करती है। सोसाइटी ने पिछले हिस्से में यतीमखाना बनाया है और सामने के हिस्से को निजी- जीवन रेखा अस्पताल को किराए पर दे दिया है। सोसाइटी वक्फ बोर्ड को कोई किराया नहीं देती, लेकिन अस्पताल से 12 से 15 लाख रुपए सालाना किराया वसूल करती है। इतना ही नहीं, सोसाइटी ने पूरी प्रॉपर्टी पर मालिकाना हक का भी दावा किया था।

भाजपा स्थापना दिवस पर 65 हजार बूथों पर फहराया गया तिरंगा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस पर (6 अप्रैल) रविवार को मप्र में 65 हजार 14 बूथों पर झंडा फहराया गया । मुख्य कार्यक्रम भाजपा मुख्यालय में हुआ। यहां भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ध्वज फहराया। वहीं पार्टी कार्यकर्ता बूथ के साथ घर-घर जाकर पार्टी का ध्वज फहराकर मिठाइयां बांटी। बूथ और विधानसभा स्तर पर आयोजित सम्मेलनों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, धारा-370, नागरिक संशोधन अधिनियम, ट्रिपल तलाक, पार्टी की चुनावी सफलताएं, संगठनात्मक विस्तार, भारतीय राजनीति में भाजपा द्वारा लाया गया परिवर्तन एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत की ओर यात्रा जैसे विषयों पर जनता को जानकारी दी गई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मैहर जिले को दी 71 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात, किया मां शारदा के दर्शन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। रामनवमी के दिन 6 अप्रैल को मैहर जिले के प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जिले को 70 करोड 99 लाख 84 हजार रूपये लागत के विकास कार्यों की सौगात दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव नवरात्रि के अवसर पर मैहर में मां शारदा देवी के दर्शन-पूजन के उपरांत बंधा बैरियर में आयोजित आमसभा को संबोधित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव यहां मैहर जिले के 71 करेड रूपये लागत के विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इन 52 कार्यों में 43 करोड 16 लाख 49 हजार रूपये के 38 विकास निर्माण कार्यों का भूमिपूजन और 27 करोड 83 लाख 35 हजार रूपये लागत के 14 विकास कार्यों का लोकार्पण शामिल है। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री राधा सिंह, राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, विधायक मैहर श्रीकांत चतुर्वेदी, रामपुर बघेलान विक्रम सिंह, चित्रकूट सुरेंद्र सिंह गहरवार, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, नगरपालिका अध्यक्ष गीता संतोष सोनी, जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने भी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने मैहर में मां शारदा के किये दर्शन: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मैहर जिले के अपने प्रथम प्रवास के दौरान सबसे पहले मां षारदा मंदिर पहुंचकर रामनवमी के अवसर पर मां षारदा देवी के दर्षन और पूजा अर्चना की। उन्होंने इस अवसर पर देष और प्रदेषवासी की समृद्धि और खुषहाली की कामना की।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मां षारदा का यह पावन स्थल केवल प्रदेष ही नहीं बल्कि समूचे देष में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मैहर में मां षारदा के देवी लोक को लेकर बडा प्लान बनाया गया है। जिसके संबंध में षीघ्र बैठक लेकर इस दिषा में प्रयास किये जायेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने सभी देव स्थानों पर षराब बंदी का फैसला लिया है। मां षारदा जनता की भलाई और उनके जनहित कार्यों के लिए सबको आषीर्वाद प्रदान करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि वीर आल्हा की 1300वीं जन्म जयंती मनाई जा रही है। वीर आल्हा के चरित्र और उनकी वीरता जन-जन तक पहुंचे इस ओर भी प्रयास किया जायेगा। इस मौके पर प्रभारी मंत्री श्रीमती राधा सिंह, राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, सांसद गणेष सिंह, विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी भी उपस्थित थे।

शराब बंदी पर सीएम डॉ. मोहन यादव का मैहर में भव्य स्वागत: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने चैत्र नवरात्रि की नवमीं पर मैहर स्थित षक्ति पीठ में मां षारदा देवी के दर्षन-पूजन कर आषीर्वाद प्राप्त किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार ने अपना संकल्प पूरा करते हुए प्रदेश के 19 पवित्र और धार्मिक महत्व के स्थलों पर पूर्ण षराब बंदी लागू की है। मैहर सहित इन सभी 17 स्थानों पर ना तो षराब की दुकान होगी और ना ही षराब का ₹ य-विक्रय होगा। मुख्यमंत्री अपने मैहर प्रवास के दौरान मां षारदा देवी की नगरी मैहर में स्टेट बैंक चौराहा, काली मंदिर से कटरा बाजार होते हुए घंटा घर चौक तक नगरवासियों द्वारा आयोजित आभार एवं अभिनंदन यात्रा में षामिल हुए। मुख्यमंत्री जिप्सी में सवार होकर कटरा बाजार से निकले जहां व्यापारी संघ, स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं आमजन विषेष कर महिलाओं ने मां षारदा की चुनरी भेंटकर तथा पुष्पवर्षा कर मुख्यमंत्री जी का आत्मीय अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नागरिकों के इस भव्य स्वागत पर कहा कि आपके अपार और प्रेम आषीर्वाद से मन अभिभूत है। इस मौके पर मुख्यमंत्री के साथ रथ पर प्रभारी मंत्री श्रीमती राधा सिंह, राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, सांसद गणेष सिंह, विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष कमलेष सुहाने भी उपस्थित रहे।

देहदान के लिए संकल्पित लोगों का सैनिक संगठन ने किया सम्मान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। पूर्व सैनिक संगठन ब्लॉक इकाई उचेहरा के द्वारा पिथौराबाद में देहदान के लिए संकल्पित पद्मश्री बाबूलाल दाहिया,बाल्मीक सिंह, डॉ सदाचारी सिंह तोमर,देवलाल सिंह, सावित्री सिंह,सुरेश दाहिया,रामगोपाल सिंह,अनुपम दाहिया का सम्मान किया गया वहीं इनसे प्रेरित होकर रामलोटन कुशवाहा, रामदुलारे सेन ने भी देहदान करने की घोषणा की है। इस दौरान पूर्व सैनिक संगठन के अध्यक्ष सुनील सिंह परिहार, संरक्षक सतपाल सिंह परिहार, उचेहरा ब्लॉक अध्यक्ष उदयभान सिंह,अशोक सिँह,संजय सिंह,भारतीय किसान यूनियन अध्यक्ष ठाकुर प्रसाद सिंह,आर के सिंह,ब्रजभान सिंह,राजीव सिंह,अमित मिश्रा,भूपेंद्र सिंह गोबराव खुर्द,इंद्रपाल सिंह,संतोष सिंह,भारत सिंह,विजेंद्र नाथुलाल सिंह, प्रमोद सिंह, संध्या सिंह जनपद सदस्य ,डॉ विपिन सिंह,काशी प्रसाद गौतम ब्रजमोहन प्रजापति सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

मैहर दर्शन बस सेवा का रामनवमी के अवसर पर हुआ शुभारंभ

मैहर दर्शन की एक ट्रिप का किराया 30 रुपए प्रति यात्री होगा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मां शारदा प्रबंधन समिति की ओर से मैहर दर्शन बस सेवा का शुभारंभ रामनवमी के अवसर पर बंधा बैरियर से किया गया। विधायक मैहर श्रीकांत चतुर्वेदी ने हरी झण्डी दिखाकर बस सेवा का षुभारंभ किया। इस मौके पर कलेक्टर रानी बाटड, पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल, जिलाध्यक्ष कमलेष सुहाने, समिति सदस्य सचिन मिश्रा भी उपस्थित थे। मैहर दर्षन बस सेवा के तहत मैहर दर्शन की एक ट्रिप का किराया 30 रुपए प्रति यात्री होगा। यह बस बंधा बैरियर से प्रारंभ होकर आल्हा मंदिर, आल्हा अखाड़ा, गोला मठ, बड़ा अखाड़ा मंदिर, मैहर किला, अलाउद्दीन खां म्यूजियम, नीलकंठ मंदिर, ओईला बड़ी माई मंदिर आदि स्थलों का भ्रमण करती हुईं वापस बंधा बैरियर आएगी। मैहर दर्शन की यह 32 सीटर बस दिन भर में चार फेरे लगाएगी।

सिंगरौली के जंगल में तीन दिन से लगी आग

डीएफओ बोले- कई बार गांववाले महुआ बीनते समय आग लगा देते हैं

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली के जंगल में तीन दिन से आग लगी है। इस दौरान पांच से छह एकड़ जंगल जल चुका है। यह इलाका बरगवां क्षेत्र में आता है। डीएफओ अखिल बंसल के अनुसार, बरगामा बीट के दुर्घटना देवी मंदिर पहाड़ के सामने आग लगने की सूचना मिली। वन विभाग ने तुरंत अपना अमला भेज दिया। तेज हवाओं के कारण आग तेजी से फैल रही है। वन विभाग स्थानीय निवासियों की मदद से आग को काबू में करने का प्रयास कर रहा है।

डीएफओ ने बताया कि महुआ के मौसम में ग्रामीण जंगल में महुआ बीनने जाते हैं। कई बार वे आग लगा देते हैं और उसे बुझाते नहीं हैं। इससे आग जंगल में फैल जाती है। वन विभाग ने गांवों में मुनादी करवाकर लोगों को जंगल में आग न लगाने की चेतावनी दी है। इससे पहले माडा वन क्षेत्र में भी आग लगने की सूचना मिली थी। फिलहाल इस आग के सटीक कारणों की जांच की जा रही है।

सीधी के घर में लगी आग, पूरा मकान जलकर राख

एफएसएल की टीम करेगी जांच

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के जमोड़ी थाना क्षेत्र के ग्राम पनवार में रवि पांडे के घर में अचानक आग लग गई। आग से देखते ही देखते पूरा मकान जलकर राख हो गया। घटना शनिवार रात 8.30 बजे की है।

एसपी डॉ. रविंद्र वर्मा ने बताया कि मामले में केस दर्ज कर लिया गया है। एफएसएल की टीम आग लगने के कारणों की जांच करेगी। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पीड़ित रवि पांडे ने बताया कि रात तकरीबन 8 बजे घर में आग लगी। उस वक्त मेरी मां घुटने में तेल लगा रही थी। भाभी घर में काम कर रही थी और भतीजा असाइनमेंट लिख रहा था। मां ने देखा कि घर में अचानक आग लग गई। शोर-शराबा सुनकर बगल के चाचा और पड़ोसी पहुंचे। लेकिन तब तक मकान जलकर राख हो गया।पीड़ित रवि पांडे ने बताया कि आग लगाने वालों में चार लोगों के नाम हैं। जिनमें से एक व्यक्ति ने तीन दिन पहले उसने मुझे धमकी दी थी। जिसकी रिकॉर्डिंग मेरे पास मौजूद है। इस आग से मेरा पूरा परिवार झुलस सकता था। लेकिन रात ज्यादा नहीं हुई थी। इस कारण सभी जग रहे थे और जान बचाकर घर से बाहर भागे।

मऊगंज कलेक्ट्रेट का घेराव प्रदर्शन आज 7 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला मऊगंज के गडरा में पूर्व की घटनाओं सहित अभी हाल ही में एक ही साकेत परिवार के तीन सदस्यों की संदिग्ध हत्या के निष्पक्ष जांच एवं वैधानिक कार्यवाही हेतु आज 07 अपैल को बहुजन समाज पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के आदेशानुसार कलेक्ट्रेट कार्यालय का घेराव कर कलेक्टर एवं एसपी मऊगंज को ज्ञापन दिया जाना है। उक्त प्रदेशन मे शामिल होने के लिये लोकसभा इकाई रीवा-मऊगंज जिला के समस्त पदाधिकारी, कार्यकर्ता, पूर्व पदाधिकारी, पूर्व प्रत्याशी लोकसभा, विधानसभा, नेता जनप्रतिनिधिगण, पूर्व जन प्रतिनिधिगण, पूर्व सांसद, पूर्व विधायक एवं तमाम बहुजन समाज एवं बहुजन समाज पार्टी से संबंधित साथियों को निर्देशित एवं निवेदन किया जाता है कि आज 07 अप्रैल दोपहर 01:00 बजे बहुजन समाज पार्टी के केंद्रीय स्टेट कोऑर्डिनेटर एड0 दिलीप बौद्ध नेतृत्व मे एवं प्रदेश अध्यक्ष बसपा मध्य प्रदेश के मार्गदर्शन मे मऊगंज बस स्टैंड से रैली निकाल कर जिला मुख्यालय मऊगंज का घेराव एवं प्रदर्शन कर ज्ञापन सौपा जायेगा। अतः आज अपने समस्ते काम छोड़कर ज्यादा से ज्यादा संख्या में मऊगंज पहुंचने का काम करें।

सतना हार्डवेयर पेंट्स ऐसो. ने शोभायात्रा का पुष्पवर्षा कर किया स्वागत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। विंध्य क्षेत्र की अग्रणी व्यापारिक संस्था हार्डवेयर पेंटस ऐसो हिन्दू पर्व समन्वय समिति के तत्वाधान में रामनवमी के पावन पर निकलने वाली शोभायात्रा का अस्पताल चौक माता मंदिर के बगल में ऐसों के अध्यक्ष घनश्याम अच्छडा जी के प्रतिष्ठान के सामने पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया। संस्था के महामंत्री विनोद गेलानी ने जानकारी देते हुए बताया शोभायात्रा का पुष्पवर्षा के साथ-साथ प्रसाद का भी वितरण किया। संरक्षक श्री रूपचंद सचदेव अध्यक्ष घनश्यामदास अच्छडा सुरेश बड़ेरिया राकेश गुप्ता विनोद गेलानी,सनी सीरवानी राजेश दासावानी संतोष अग्रवाल प्रदीप अग्रवाल विनोद मंघनानी विशाल गेलानी सुभाष तिवारी मोहनलाल गुप्ता अनिल सचदेवा राकेश चांदवानी राजा घोघवानी,सुरेश अच्छडा बलराम अच्छडा रामचंद अच्छडा हेमंत राजवानी दीपेश केसवानी नीरज अग्रवाल पंकज अग्रवाल राज गुप्ता नीरज अग्रवाल दिनेश गुप्ता राजा माधवानी अजय जायसवाल नवनीत सिंह संस्था के सभी सदस्यों से शोभायात्रा में शामिल हुये।

भारतीय सिंधू सभा ने पुष्प वर्षा कर किया शोभायात्रा का स्वागत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। हिंदू पर्व समन्वय समिति के तत्वाधान में श्री रामनवमी शोभा यात्रा के अवसर पर राष्ट्रीय समाजसेवी संस्था भारतीय सिंधू सभा सतना संस्थाध्यक्ष अशोक चांदवानी के नेतृत्व में 7अप्रैल सायं 5बजे श्री महावीर भवन के पास कमल सलेक्शन के सामने पुष्पवर्षा से भव्य स्वागत- वंदन-अभिनंदन किया गया। संस्था के महामंत्री विनोद गेलानी ने बताया शोभायात्रा का भव्य स्वागत करते हुए प्रभु श्रीराम का माल्यार्पण के साथ पुष्पवर्षा करके आरती भी की। स्वागत करने वालों में श्री सतीश सुखेजा विक्रम चौधरी गोपी गेलानी श्रीचंद मनवाणी गोपीचंद कापड़ी विजय जग्यासी मनोहर आरतानी विनोद गेलानी देवेंद्र सत्यवानी अशोक आहूजा विकास सुखेजा जैकी सांवरिया इंद्रलाल कापड़ी मनीष टेकवानी सुरेश भाषानी कन्हैया लाल पोहानी जेठानन्द वाधवानी पहलाज राय भावनानी घनश्याम दास सोनी रंजीत सेनानी घनश्याम मघरानी भरत कामदार नारायण दास गुलाबी गंगाराम सचदेव केशव मखीजा संजय आहूजा पंकज आहूजा भानु हासवानी संदीप तोलवानी मनोज नोतानी संजय नागदेव राजकुमार रोचलानी करतार कामरानी डॉ अशोक दुलानी महेश रावलानी मनीष सदानी संजय वाधवानी शंकर सेनानी पहलाज राय चेतवानी अशोक नागदेव राखी होतचंदानी सिमरन होतचंदानी बबीता गंगवानी ने समाज के सभी माता बहनों भाइयों ने शोभायात्रा में सपरिवार शामिल शिरकत की।

सीधी में जमीन के विवाद में दो भाइयों पर हमला

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के भदौरा गांव में रविवार शाम 5 बजे जमीन के विवाद में चार लोगों ने मिलकर दो भाइयों पर लाठी-डंडे और लोहे के रॉड से हमला कर दिया।

मझौली थाना पुलिस के मुताबिक, घायल भाइयों की पहचान मुलायम यादव और सुरेश यादव के रूप में हुई है। आरोपी गांव के ही ध्रुव, मदन, दादू और सनी सिंह हैं। सुरेश यादव के सिर में गंभीर चोटें आईं। उन्हें छह टांके लगे हैं। मुलायम यादव का हाथ फ्रैक्चर हुआ है। उनके सिर में तीन टांके लगे हैं।

108 एंबुलेंस से दोनों घायलों को जिला अस्पताल सीधी पहुंचाया गया। यहां उनका इलाज चल रहा है। तीन एकड़ जमीन को लेकर यह विवाद लंबे समय से चल रहा था। दोनों पक्षों के बीच पहले भी कई बार तनाव की स्थिति बनी। मझौली थाना पुलिस मौके पर पहुंची। थाना प्रभारी दीपक सिंह बघेल ने बताया कि पीड़ित पक्ष की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस हमलावरों की तलाश कर रही है। जल्द ही कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

श्रीमद भागवत पुराण में बरस रही ज्ञान रूपी अमृत वर्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। परम पूज्य श्रद्धेय श्री श्री 1008 श्री श्री राम लोचन शरण जू महाराज शरीफ फलाहारी आश्रम, देवी धाम मैहर के मुखारविंद से अमृत रूपी ज्ञान वर्षा से क्षेत्र की जनता अनुसरण होकर अपने आप को कृतज्ञ महसूस कर रही है।

आपको बता दे आयोजन कर्ता भाजपा जिला कोषा अध्यक्ष संतोष तिवारी द्वारा बताया गया कि कथा श्रवण करने हेतु आसपास के कई ग्राम पंचायत सहित रीवा जिले से सनातन प्रेमी पहुंचकर पूज्य महाराज द्वारा मानव जीवन में शास्त्रों द्वारा बताए गए मार्गो का कथा रूपी ज्ञान से मार्ग दर्शन प्राप्त कर रहे हैं। आपको बता दे आज श्री मद भागवत महापुराण सप्ताह का आज पांचवा दिन है। वही कथा श्रवण करने हेतु प्रति दिन सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। वही तिवारी परिवार के सदस्य अमित तिवारी द्वारा बताया गया की 8 अप्रैल को भागवत महापुराण का समापन होगा।वही कथा का आनंद लेने त्यौंथर विधायक सिद्धार्थ तिवारी, भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष डॉ अजय सिंह, मनगवा पूर्व विधायक पंचू लाल प्रजापति सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र तिवारी सहित क्षेत्र के कई अन्य वरिष्ठ सनातन प्रेमी कथा प्रेमियों ने भागवत महापुराण का श्रवण करने पहुंचे।आपको बता दें कि 9 अप्रैल को महाप्रसाद एवं भंडारा होगा।।

विचार

विश्व व्यापार संधि का अस्तित्व खतरे में

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में व्यापार युद्ध (टैरिफ वार) ने वैश्विक व्यापार संधि को लेकर, दुनिया के देशों में एक नई चिंता पैदा कर दी है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के अंतरराष्ट्रीय संस्थान जिनके जिम्मे नियम और कानून का पालन सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगभग 166 देशों द्वारा वैश्विक व्यापार संधि में हस्ताक्षर किए हैं। उन देशों के कारोबार और आर्थिक स्थिति को लेकर संकट खड़ा हो गया है। हाल ही में अमेरिका ने टैरिफ को लेकर जो निर्णय लिए हैं। वह वैश्विक व्यापार संधि के खिलाफ हैं। उससे सारी दुनिया के देशों मे अमेरिका के साथ व्यापार को लेकर तनाव बन गया है। अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते टैरिफ युद्ध ने सभी देशों में वैश्विक व्यापार व्यवस्था को बुरी तरह से अस्थिर कर दिया है। अमेरिका ने राष्ट्र हितों की दुहाई देकर चीन, भारत एवं अन्य देशों पर आयातित वस्तुओं पर भारी शुल्क लगा दिया है। वैश्विक व्यापार संधि के अनुसार उसको इस तरह की कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है।अमेरिका एक तरफा निर्णय ले रहा है। दूसरी ओर चीन ने भी जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की इस प्रतिशोधात्मक नीति का प्रभाव सारी दुनिया के देशों के साथ-साथ अमेरिका और चीन जैसे बड़े देशों की अर्थव्यवस्था पर पड़ना तय है। इस टकराव के कारण दुनिया के 166 देशों में व्यापारिक स्थिरता को लेकर बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है। यह स्थिति तब और भी चिंताजनक हो जाती है। जब वैश्विक व्यापार संधि को नियंत्रित करने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं इस विवाद में निष्प्रभावी दिखाई पड रही हैं। दुनिया के सभी देशों के बीच वैश्विक व्यापार संधि का मूल उद्देश्य सभी देशों के बीच व्यापार विवादों का समाधान करना और वैश्विक व्यापार को सभी देशों के लिए मुक्त व्यापार के लिये अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार सभी देशों के लिये निष्पक्ष एवं स्थिर नीति को बनाना और उनका पालन करने की जिम्मेदारी है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने टैरिफ युद्ध की शुरुआत की है। इसमें दो बड़ी वैश्विक शक्तियां अमेरिका और चीन वैश्विक व्यापार संधि के नियमों की अनदेखी करते हुए एक दूसरे के ऊपर मनमाने तरीके से टैरिफ लगाने की होड़ में लग गए हैं। जिसके कारण सारी दुनिया के देशों में अफरा-तफरी का माहौल बन गया है। अंतरराष्ट्रीय नियंत्रक संस्थायें चुप बैठी हुई हैं। यह चिंता का सबसे बड़ा कारण बन गया है। अमेरिका ने चीन की 16 कंपनियों पर रोक लगा दी है। जवाबी कार्रवाई करते हुए चीन ने भी अमेरिकी वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ा दिया है। चीन ने अमेरिका की कंपनियों पर रोक लगा दी है।

गंभीर खतरे की घंटी है प्लास्टिक एवं माइक्रोप्लास्टिक

प्रकृति को पस्त करने, वायु एवं जल प्रदूषण, कृषि फसलों पर घातक प्रभाव, मानव जीवन एवं जीव-जन्तुओं के लिये जानलेवा साबित होने के कारण समूची दुनिया में बढ़ते प्लास्टिक एवं माइक्रोप्लास्टिक के कण एक बड़ी चुनौती एवं संकट है। पिछले दिनों एक अध्ययन में मनुष्य के मस्तिष्क में प्लास्टिक के नैनो कणों के पहुंचने पर चिंता जतायी गई थी। दावा था कि प्रतिदिन सैकड़ों माइक्रोप्लास्टिक कण सांसों के जरिये हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसे तमाम नये राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध-सर्वेक्षण-अध्ययन चेतावनी दे रहे हैं कि हमारी सांसों, पेयजल व फसलों में घातक माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी एक गंभीर संकट है।

विश्व की कई शोध पत्रिकाओं में छपे शोध-लेख समय-समय पर विभिन्न अध्ययनों के चेताने वाले निष्कर्ष प्रकाशित करते रहते हैं। संकट तो यहां तक बढ़ गया है कि प्लास्टिक के कण पौधों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को प्रभावित करने लगे हैं, जिससे खाद्य श्रृंखला में शामिल कई खाद्यान्नों की उत्पादकता में गिरावट आ रही है। ऐसा निष्कर्ष अमेरिका-जर्मनी समेत कई देशों के साझे अध्ययन के बाद सामने आया है। दरअसल, प्लास्टिक कणों के हस्तक्षेप के चलते पौधों के भोजन सृजन की प्रक्रिया बाधित हो रही है। इस तरह माइक्रोप्लास्टिक की दखल भोजन, हवा व पानी में होना न केवल प्रकृति, कृषि, पर्यावरण वरन मानव अस्तित्व के लिये गंभीर खतरे की घंटी ही है। जिसे बेहद गंभीरता से लिया जाना चाहिए और सरकारों को इस संकट से मुक्ति की दिशाएं उद्घाटित करने के लिये योजनाएं बनानी चाहिए।

माइक्रोप्लास्टिक हमारे वातावरण का एक हिस्सा बन चुके हैं। प्लास्टिक की बहुलता एवं निर्भरता के कारण मौत हमारे सामने मंडरा रही है। हम चाहकर भी प्लास्टिकमुक्त जीवन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि माइक्रोप्लास्टिक जीवन में हैं, हवा में हैं, पानी में हैं, नदी में हैं, समुद्र में हैं, बारिश में हैं, और इन सबके चलते वे हमारे भोजन में भी हैं, हम मनुष्यों के भी, पशुओं के भी और शायद सभी प्राणियों के जीवन में भी हैं। लगातार दूषित होते जल, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और भूमि क्षरण जैसे मुद्दों पर सरकार की जागरूकता एवं सहयोग का भरोसा दिलाया जाता रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण के खतरों को देखते हुए सरकार ने ठान लिया है कि भारत में सिंगल यूज प्लास्टिक के लिए कोई जगह नहीं होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्व में ही देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्लास्टिक कचरे से मुक्त करने की अपील करते हुए एक महाभियान का शुभारंभ कर चुके हैं। प्लास्टिक के कारण देश ही नहीं, दुनिया में विभिन्न तरह की समस्याएं पैदा हो रही हैं। इसके सीधे खतरे दो तरह के हैं। एक तो प्लास्टिक में ऐसे बहुत से रसायन होते हैं, जो कैंसर का कारण माने जाते हैं। इसके अलावा शरीर में ऐसी चीज जा रही है, जिसे हजम करने के लिए हमारा शरीर बना ही नहीं है, यह भी कई तरह से सेहत की जटिलताएं पैदा कर रहा है। इसलिए आम लोगों को ही इससे मुक्ति का अभियान छेड़ना होगा, जागृति लानी होगी।

चिंता की बात यह भी है कि विकासशील देशों में सरकारें रोटी, कपड़ा व मकान जैसी मूलभूत सुविधाओं के जुगाड़ में लगे रहने और गरीबी की समस्या से जूझते हुए, स्वास्थ्य के उन उच्च गुणवत्ता मानकों को वरीयता नहीं दे पाती, जो अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के अनुरूप हों। शोधकर्ताओं ने केरल में दस प्रमुख ब्रांडों के बोतलबंद पानी को अध्ययन का विषय बनाया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि प्लास्टिक की बोतल के पानी का इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति के शरीर में प्रतिवर्ष 153 हजार प्लास्टिक कण प्रवेश कर जाते हैं। निश्चय ही यह चिंता का विषय है। हालांकि, सर्वेक्षण के लिये केरल को ही चुनना और बोतलबंद पानी बेचने वाली भारतीय कंपनियों को चुनने को लेकर कई सवाल पैदा हो सकते हैं। पिछली सदी में जब प्लास्टिक के विभिन्न रूपों का अविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था, अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे हैं और न इसका उपयोग ही रोक पा रहे हैं, तो क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता एवं त्रासदी मान लिया जाए?

वैज्ञानिकों ने पाया है कि प्लास्टिक हम सबके शरीर में किसी-न-किसी के रूप में पहुंच रहा है। कैसे पहुंच रहा है, इसे जानने के लिए हमें पिछले दिनों अमेरिका के कोलोराडो में हुए एक अध्ययन के नतीजों को समझना होगा। अमेरिका के जियोलॉजिकल सर्वे ने यहां बारिश के पानी के नमूने जमा किए। ये नमूने सीधे आसमान से गिरे पानी के थे, बारिश की वजह से सड़कों या खेतों में बह रहे पानी के नहीं। जब इस पानी का विश्लेषण हुआ, तो पता चला कि लगभग 90 फीसदी नमूनों में प्लास्टिक के बारीक कण या रेशे थे, जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है। ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि हम इन्हें आंखों से नहीं देख पाते। देखने में आ रहा है कि कथित आधुनिक समाज एवं विकास का प्रारूप अपने को कालजयी मानने की गफलत पाले हुए है और उसकी भारी कीमत माइक्रोप्लास्टिक के कहर के रूप में चुका रहा है। लगातार पांव पसार रही माइक्रोप्लास्टिक की तबाही इंसानी गफलत को उजागर तो करती रही है, लेकिन समाधान का कोई रास्ता प्रस्तुत नहीं कर पाई। ऐसे में अगर मोदी सरकार ने कुछ ठानी है तो उसका स्वागत होना ही चाहिए। क्या कुछ छोटे, खुद कर सकने योग्य कदम नहीं उठाये जा सकते?

पूरी दुनिया के लिए सिरदर्द बन चुके जल और वायु प्रदूषण से बचने के लिए विश्वभर में नए-नए उपाय किए जा रहे हैं। जबकि प्लास्टिक प्रदूषण की उससे भी ज्यादा खतरनाक एवं जानलेवा स्थिति है, यह एक ऐसी समस्या बनकर उभर रही है, जिससे निपटना अब भी दुनिया के ज्यादातर देशों के लिए एक बड़ी चुनौती है। कुछ समय पहले एक खबर ऐसी भी आई थी कि एक चिड़ियाघर के दरियाई घोड़े का निधन हुआ, तो उसका पोस्टमार्टम करना पड़ा, जिसमें उसके पेट से भारी मात्रा में प्लास्टिक की थैलियां मिलीं, जो शायद उसने भोजन के साथ ही निगल ली थीं। लेकिन अगर आप सोचते हैं कि प्लास्टिक सिर्फ हमारे आस-पास रहने वाले अबोध जानवरों के पेट में ही पहुंच रहा है, तो आप गलत हैं।

अध्ययन में पता चला था कि लगभग सभी ब्रांडेड बोतल बंद पानी में भी प्लास्टिक के ये सूक्ष्म कण मौजूद हैं। कनाडाई वैज्ञानिकों द्वारा माइक्रोप्लास्टिक कणों पर किए गए विश्लेषण में चौंकाने वाले नतीजे मिले हैं। विश्लेषण में पता चला है कि एक वयस्क पुरुष प्रतिवर्ष लगभग 52000 माइक्रोप्लास्टिक कण केवल पानी और भोजन के साथ निगल रहा है। इसमें अगर वायु प्रदूषण को भी मिला दें तो हर साल करीब 1,21,000 माइक्रोप्लास्टिक कण खाने-पानी और सांस के जरिए एक वयस्क पुरुष के शरीर में जा रहे हैं। दरअसल, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बोतलबंद पानी बेचने का बड़ा प्रतिस्पर्धी कारोबार है। आम आदमी के मन में सवाल उठ सकते हैं कि कहीं भारतीय बोतलबंद पेय बाजार को तो निशाने पर नहीं लिया जा रहा है। दुनिया के बड़े कारोबारी देश भारत के बड़े उपभोक्ता बाजार पर ललचाई दृष्टि रखते हैं। इसके बावजूद मुद्दा गंभीर है और हमारी सरकारों को अपने स्तर पर गंभीर जांच-पड़ताल करनी चाहिए। अमेजन एवं फिलीपकार्ट जैसे आनलाइन व्यवसायी प्रतिदिन 7 हजार किलो प्लास्टिक पैकेजिंग बैग का उपयोग करते हैं। सरकारों के पास किसी भी नियम या अभियान को अमल में लाने के लिये सारे संसाधन उपलब्ध हैं, इन कम्पनियों को भी प्लास्टिकमुक्त भारत के घेरे में लेने के लिये कठोर कदम उठाने चाहिए। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि देश में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग पर प्रतिबंध के बावजूद ये खुलेआम बिक क्यों रहा है? दुकानदारों व उपभोक्ताओं को तो इसके उपयोग पर दंडित करने का प्रावधान है, लेकिन सिंगल यूज प्लास्टिक उत्पादित करने वाले उद्योगों पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगाया जाता? संकट का एक पहलू यह भी है कि लोग सुविधा को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन प्लास्टिक के दूरगामी घातक प्रभावों को लेकर आंख मूंद लेते हैं।

राम नाम लेकर सत्ता में पहुँची भाजपा का जन्मदिन रामनवमी पर, रामेश्वरम में मोदी ने एक संयोग और जोड़ा

आज रामनवमी है यानि प्रभु श्रीराम का जन्मदिन। संयोग देखिये कि देश में सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी का जन्मदिन भी इस बार प्रभु श्रीराम के जन्मदिवस पर ही पड़ा है। हम आपको बता दें कि आज भाजपा का स्थापना दिवस है। राम नाम लेकर भाजपा ने जिस तरह देशभर में अपना परचम फहराया और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर बनाने का संकल्प सिद्ध कर दिखाया, यह उसी की परिणति है कि पार्टी लगातार चुनाव जीतती जा रही है। रामनवमी के पर्व पर पड़े भाजपा के स्थापना दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रामेश्वरम के दौरे पर हैं। रामेश्वरम को वह स्थान माना जाता है, जहाँ भगवान श्रीराम ने रावण को हराने के लिए लंका तक जाने के लिए पुल का निर्माण किया था। खास बात यह है कि प्रधानमंत्री रामेश्वरम में श्रीलंका यात्रा के बाद पहुँचे हैं। प्रधानमंत्री ने यहां पंबन पुल का उद्घाटन किया है। रामनवमी यानि रामजी के जन्मदिन के दिन प्रधानमंत्री द्वारा इस पुल का उद्घाटन करने का काफी धार्मिक महत्व माना जा रहा है। दूसरी ओर, भाजपा आज अपने स्थापना दिवस पर कई कार्यक्रम आयोजित कर रही है। पार्टी के नेता अपने भाषणों में कह रहे हैं कि भारतीय जनता पार्टी जहां ''राष्ट्र

भक्ति'' को समर्पित है वहीं विरोधी दलों का समर्पण ''परिवार भक्ति'' के प्रति है। भाजपा नेता परिवारवादी पार्टियों को लोकतंत्र का दुश्मन भी करार दे रहे हैं। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी मुख्यालय पर ध्वजारोहण कर पार्टी के विचारक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह तथा भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी स्थापना दिवस पर कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए उनका मार्गदर्शन भी किया। इसके अलावा सभी राज्यों में पार्टी की ओर से तमाम कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं और अब तक के सफर में योगदान देने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं को याद किया जा रहा है।

देखा जाये तो देश के राजनीतिक इतिहास में छह अप्रैल का दिन खास अहमियत रखता है क्योंकि भारतीय जनता पार्टी की स्थापना 1980 में आज ही के दिन हुई थी। श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा 1951 में स्थापित भारतीय जन संघ से इस नयी पार्टी का जन्म हुआ था। स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने मुंबई में हुए अधिवेशन में भाजपा की नींव रखी थी और वह पार्टी के पहले अध्यक्ष भी चुने गये थे। दो सांसदों वाली पार्टी से तीसरी बार केंद्र में लगातार सरकार बनाने वाली पार्टी बनी भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी सदस्य संख्या वाली राजनीतिक पार्टी भी है। यही नहीं आज देश में भाजपा या भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए की डेढ़ दर्जन से ज्यादा राज्यों में सरकार है। इस तरह पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की विचारधारा से उपजी भारतीय जनता पार्टी एक तरह से अपने स्वर्णिम काल में है।

जनता का भाजपा के प्रति आकर्षण इसलिए भी बढ़ता जा रहा है क्योंकि वह चुनाव परिणाम की परवाह किये बिना राष्ट्रहित के मुद्दों पर आगे बढ़ने में संकोच नहीं करती। अयोध्या में राम मंदिर बनाने की बात हो, जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटाने की बात हो, मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक से निजात दिलाने की बात हो, वक्फ संशोधन विधेयक पारित कराने की बात हो, महिला आरक्षण विधेयक पारित कराने की बात हो या फिर समान नागरिक संहिता और %एक देश एक चुनाव% जैसे बड़े सुधारों पर आगे बढ़ने की बात हो, भाजपा ने बिना संकोच किये अपने नीतिगत मुद्दों पर कदम आगे बढ़ाया और राष्ट्र को प्रगति पथ पर ले गयी।

हम आपको यह भी बता दें कि भारतीय जनता पार्टी अपनी स्थापना के समय से ही पंच निष्ठाओं को लेकर चली है। यहं पंच निष्ठाएं हैं- 1- राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता, 2- लोकतंत्र, 3- सामाजिक और आर्थिक विषय पर गांधीवादी दृष्टिकोण, 4- सकारात्मक पंथनिरपेक्षता, 5- मूल्यों पर आधारित राजनीति। इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से तय किये गये संकल्प- %एक भारत श्रेष्ठ भारत%, %2047 तक विकसित भारत% को सिद्ध करने के लिए भाजपा %सबका साथ सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास% के मूलमंत्र के आधार पर काम करने में जुटी हुई है।

सरकार एडजस्टमेंट करे या हमें इच्छामृत्यु दे दे...

छत्तीसगढ़ में बर्खास्त किए गए सहायक शिक्षक पिछले 113 दिन से एडजस्टमेंट की मांग को लेकर अंगारों में चलकर किया प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर,रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ में बर्खास्त किए गए B.Ed सहायक शिक्षक पिछले 113 दिन से एडजस्टमेंट की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। शनिवार की रात अपनी बात सरकार तक पहुंचाने के लिए शिक्षकों ने अंगारों पर चलकर प्रदर्शन किया। शिक्षकों ने कहा कि सरकार सेवा सुरक्षा दे या हमें इच्छा मृत्यु दे दे। इस दौरान महिला टीचर्स ने कहा कि जैसे सतयुग में अपनी सत्यता को सिद्ध करने के सीता माता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी। वैसे ही आज हमें भी अंगारों पर चलकर अग्नि परीक्षा देनी पड़ रही है। शिक्षक अपने हाथों में तख्ती लेकर चल रहे थे, जिसमें लिखा था सरकार हम निर्दोष शिक्षकों की गलती बताए। महिला टीचर्स ने कहा कि 113 दिनों से हम संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन सरकार का कोई भी प्रतिनिधि हमारी सुध लेने नहीं आया है। कमेटी के नाम पर हमें ठगा जा रहा है। इस प्रदर्शन के जरिए हम सरकार को बताना चाहते हैं कि हम कितने तकलीफ में हैं। अंगारों पर चलकर हमारे पैर उतने नहीं जितना सरकार की उदासीनता से जल रहे हैं। अंगारों पर चलकर हमनें माता रानी को मनाने की कोशिश की है। और मन्नत मांगी है कि माता की कृपा हो जाए सरकार को सद्बुद्धि दे दे और सरकार जल्द हमारे समायोजन का निर्णय ले। एक महिला शिक्षिका ने कहा कि हमारी स्थिति ऐसी हो गई है कि हम कभी भी गलत कदम उठा सकते हैं। 113 दिन से घर से बाहर रहकर हम तूता धरना स्थल में प्रदर्शन कर रहे हैं। सरकार हमारी मांगों को लेकर अब तक फैसला नहीं ले पाई है।सरकार से हमारी मांग है कि हमें हमें नौकरी सुरक्षा दे या हमें इच्छा मृत्यु दे दे। हम क्या करें अब हमें समझ नहीं आ रहा है। अगर हम कुछ भी कदम उठाएंगे तो उसकी जिम्मेदारी सरकार की रहेगी। महिला शिक्षिका ने कहा कि नवरात्रि के दौरान हमने चुनरी यात्रा निकालकर मां दुर्गा की आराधना की है और अब अंगारों पर चलकर भी हम अपनी बात सरकार तक पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इसके बाद भी हमारी मांगों को अनदेखा किया जा रहा है। प्रदर्शन कर रहे शिक्षकों ने कहा कि 3 जनवरी 2025 को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में बनाई गई समिति की दूसरी बैठक 4 अप्रैल को प्रस्तावित थी, जिसमें समायोजन को लेकर निर्णय लिए जाने थे, लेकिन अभी तक हमें इस बैठक की भी जानकारी नहीं है। बर्खास्त शिक्षकों ने कहा कि बैठक में क्या निर्णय लिया गया है।

साइकिल रैली से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का दिया संदेश

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। बिलासपुर में रविवार को स्वास्थ्य जागरूकता के लिए एक विशेष साइकिल रैली का आयोजन किया गया। केंद्र सरकार के फिट इंडिया मिशन के अंतर्गत आयोजित इस रैली का नेतृत्व पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह ने किया।

रैली में जिला बल, सीएएफ और नगर सेना के अधिकारी-कर्मचारियों सहित 200 से ज्यादा नागरिकों ने भाग लिया। यह आयोजन केंद्र सरकार की 'खेलो इंडिया योजना' के 'फिट इंडिया पहल' का हिस्सा था। केंद्रीय युवा मामले एवं खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने 'द संडे ऑन साइकिल' थीम के तहत इस पहल को बढ़ावा दिया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह ने लोगों से साइकिलिंग, वॉकिंग या अन्य शारीरिक गतिविधियों को दैनिक दिनचर्या में शामिल करने की अपील की। उन्होंने कहा कि इससे ओवरईटिंग से बचा जा सकता है और पाचन संबंधी समस्याएं दूर हो सकती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि अधिकतर बीमारियां पेट से जुड़ी समस्याओं से शुरू होती हैं। साइकिल रैली पुलिस ग्राउंड से शुरू हुई। यह अग्रसेन चौक, सीएमडी चौक, पुराना बस स्टैंड, तेलीपारा रोड, कोतवाली, गोलबाजार, सिम्स चौक, देवकीनंदन चौक, नेहरू चौक और अंबेडकर चौक होते हुए पुलिस ग्राउंड पर समाप्त हुई। कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात रामगोपाल करियारे, उप पुलिस अधीक्षक रोशन आहूजा, दूसरी वाहिनी सहायक सेनानी हरिलाल ध्रुव और रक्षित निरीक्षक भूपेन्द्र कुमार गुप्ता भी मौजूद रहे।

पुलिस ने मांगे 50 हजार, एस पी ने हेड कॉन्स्टेबल को किया लाइन अटैच

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा(एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा में प्रेमिका के बाद प्रेमी ने भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि पुलिस ने केस रफा-दफा करने के लिए 50 हजार की मांग की थी, जिससे प्रताड़ित होकर युवक ने सुसाइड कर लिया। इस पर हेड कॉन्स्टेबल को लाइन अटैच कर दिया है। मामला लखनपुर थाना इलाके का है।जानकारी के मुताबिक, मृतक का नाम आशीष मिंज (20) है, जो चुकनडांड गांव निवासी था। युवक का अफेयर कोरबा की रहने वाली 16 साल की लड़की से था। 20 नवंबर 2024 को प्रेमिका अपने प्रेमी यानी आशीष के घर गई थी, वहीं उसने 21 नवंबर को फांसी लगाई थी। इसके बाद युवक ने जहर खा लिया था। दरअसल, नाबालिग सुसाइड केस में लखनपुर पुलिस आशीष मिंज और उसकी मां अलका मिंज से लगातार पूछताछ कर रही थी। पुलिस ने शुक्रवार को भी युवक को पूछताछ के लिए थाने बुलाया था। पूछताछ के बाद आशीष मिंज घर लौटा और रात में घर के बाहर पेड़ पर फांसी लगा ली। शनिवार सुबह परिजनों को आशीष मिंज की लाश फंदे पर लटकती मिली। परिजनों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा, लेकिन परिजनों ने अंतिम संस्कार से इनकार कर दिया।आशीष मिंज की मां अलका मिंज ने आरोप लगाया कि, लखनपुर थाने के हेड कॉन्स्टेबल पन्ना एक्का दबाव बना रहा था। केस रफा-दफा करने 50 हजार रुपए मांग रहा था। इसकी शिकायत युवक ने लखनपुर थाना प्रभारी प्रशिक्षु आईएएस आईपीएस से की थी।

मनरेगा योजना के तहत कार्यशाला का आयोजन

मीडिया ऑडीटर,एमसीबी (निप्र)। एमसीबी जिले में मनरेगा योजना के तहत एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यशाला में संगम अभियान, युक्तधारा और जल शक्ति अभियान पर विशेष चर्चा की गई।

कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित इस कार्यशाला में जिले के सभी विभागों के अधिकारी, जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी और तकनीकी विशेषज्ञ शामिल हुए। कार्यशाला का मुख्य लक्ष्य वित्त वर्ष 2025-26 में मनरेगा योजना के बेहतर क्रियान्वयन के लिए विभागीय समन्वय को मजबूत करना था। संगम अभियान के तहत ग्राम पंचायत स्तर पर जी आई एस तकनीक से ग्राम-योजना और डी पी आर तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया गया। यह अभियान महिलाओं के नेतृत्व में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और आजीविका विकास पर केंद्रित है। युक्तधारा पोर्टल के माध्यम से योजना निर्माण को जी आई एस आधारित बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। जल शक्ति अभियान के तहत जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण पर विशेष सत्र आयोजित किए गए। अधिकारियों ने जल प्रबंधन और कृषि विकास पर विस्तृत चर्चा की। युक्तधारा पोर्टल की कार्यप्रणाली से योजनाओं की पारदर्शी और सटीक प्लानिंग की जानकारी दी गई। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को डी पी आर निर्माण की प्रक्रिया को सरल और सटीक बनाने का मार्गदर्शन दिया गया। भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी की जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर शाखा में दो नए सदस्यों की नियुक्ति हुई है। समाजसेवी श्रीकांत सिंह और पार्षद अजय जायसवाल को जिला प्रबंध समिति का सदस्य चुना गया है। दोनों ही सदस्य रेडक्रॉस सोसाइटी जिला एमसीबी के आजीवन सदस्य हैं। श्रीकांत सिंह पहले सामाजिक संगठन 'पहल' के अध्यक्ष रह चुके हैं। वे विभिन्न सेवाभावी गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। वहीं अजय जायसवाल को क्षेत्र का जुझारू जनप्रतिनिधि माना जाता है। दोनों सदस्यों की नियुक्ति पर शुभचिंतकों ने खुशी जाहिर की है। नवनियुक्त सदस्यों ने कहा कि वे रेडक्रॉस के माध्यम से समाज सेवा के कार्यों में निरंतर योगदान देते रहेंगे।

रामनवमीं पर भगवान श्रीराम को 1100 किलो मालपुआ का भोग

मीडिया ऑडीटर,रायपुर (निप्र)। देशभर के साथ रविवार को छत्तीसगढ़ में भी रामनवमी पर कई कार्यक्रम किए गए। रायपुर के दूधाधारी और जैतूसाव मठ में भगवान राम का दूध से अभिषेक कर स्वर्ण श्रृंगार किया गया। साथ ही 1100 किलो मालपुआ का भोग लगेगा। राम मंदिर में भी सुबह से लोग दर्शन करने पहुंचे। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भी श्रीराम मंदिर में पूजा-अर्चना की। सीएम साय ने मंदिर परिसर स्थित अंजनी माता और बाल हनुमान मंदिर में भी पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लिया। बिलासपुर और रायगढ़ में भी शोभा यात्रा निकाली गई। वहीं बस्तर, अंबिकापुर समेत प्रदेशभर में रामनवमी धूमधाम से मनाई जा रही। ज्योतिषाचार्य डॉ. दत्तात्रेय होस्केरे ने बताया कि कि भगवान राम का जन्म चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को दोपहर के समय हुआ।

ज्योतिषाचार्य डॉ. दत्तात्रेय होस्केरे बताते हैं कि, भगवान राम का जन्म चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को दोपहर के समय हुआ। रविवार को रवि पुष्य योग, रवि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, मालवी योग, सुलक्ष्मी योग, बुद्धादित्य योग, सुकर्मा योग और श्रीवत्स योग का महायोग है।

कार्यकर्ताओं की मेहनत से भाजपा बनी नंबर-1 पार्टी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में भाजपा के 44वें स्थापना दिवस पर केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने जिला कार्यालय में पार्टी का ध्वज फहराया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भाजपा एक राष्ट्रवादी दल है। यह भारत को विश्व में एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। साहू ने भाजपा के इतिहास को याद करते हुए बताया कि 6 अप्रैल 1980 को दिल्ली के कोटला मैदान में अटल बिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में पार्टी का गठन हुआ था। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा केंद्र में पूर्ण बहुमत से सरकार चला रही है। केंद्रीय मंत्री ने मोदी सरकार की उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राम मंदिर का भव्य निर्माण, धारा 370 की समाप्ति और वक्फ बोर्ड का अध्यादेश जैसे ऐतिहासिक फैसले लिए गए। सरकार की योजनाओं का लक्ष्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाना है। बिलासपुर ग्रामीण जिलाध्यक्ष मोहित जायसवाल ने कहा कि पंच से लेकर सांसद तक भाजपा के जनप्रतिनिधि हैं। महापौर पूजा विधानी ने कार्यकर्ताओं की सराहना की। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश सूर्यवंशी, गुलशन ऋषि, अमरजीत सिंह दुआ समेत कई नेता मौजूद रहे। पूर्व महापौर किशोर राय ने कहा कि जब देश में जनसंघ की स्थापना नहीं हुई थी, तब कांग्रेस भाजपा का मजाक उड़ाती थी, लेकिन श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी बाजपेई ने हार नहीं मानी और आज विश्व के सबसे बड़ी पार्टी बनाकर लोगों को सही रास्ता दिखाया। कार्यक्रम में वरिष्ठ भाजपा नेता नारायण तावड़कर, चंद्रभूषण शुक्ला, किशोर शुक्ला, इतवारी साहू, मोहन लाल श्रीवास, मेलूराम देवांगन का शाल, श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन बिलासपुर शहर जिलाध्यक्ष दीपक सिंह ठाकुर ने किया।

प्रगट भये कृपाला दीनदयाला..., धूमधाम से मना राम जन्मोत्सव

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (निप्र)। सरगुजा में धूमधाम से श्रीराम जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। राम जन्मोत्सव के अवसर पर दोपहर 12 बजे राज परिवार के मुखिया टीएस सिंहदेव ने श्रीराम की विशेष आरती की। इसमें सैकड़ों भक्तों ने भाग लिया। रामनवमीं पर रामगढ़ में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने श्रीराम मंदिर पहुंचकर दर्शन किया। शक्तिपीठों व देवी मंदिरों में सुबह से लेकर दोपहर तक श्रद्धालुओं की लाइन लगी रही। श्रीराम जन्मोत्सव पर अंबिकापुर के श्रीराम मंदिर में सुबह साढ़े 9 बजे से धार्मिक अनुष्ठान शुरू हो गए थे। सुबह से ही कीर्तन मंडली द्वारा रामलला जन्मोत्सव को लेकर भजन-कीर्तन शुरू किया गया। परंपरा के अनुसार मंदिर के बंद कपाट ठीक 12 बजे जन्मोत्सव पर राजपरिवार के मुखिया टीएस सिंहदेव ने खोला। इसके साथ ही शंख और घंटे बजने लगे। जन्मोत्सव पर जय श्रीराम के जयकारों के साथ विशेष आरती का आयोजन किया गया। राज परिवार की परंपरा के अनुसार टीएस सिंहदेव ने श्रीरामलला की आरती की। रामनवमीं पर बड़ी संख्या में अयोध्या-वाराणसी से आए साधु-संत भी शामिल हुए। इस अवसर पर जमकर आतिशबाजी की गई। राम मंदिर में श्रीराम के दर्शन के लिए लोगों की कतार लगी रही। चौत्र नवरात्र पर रामगढ़ पर पूरे 9 दिन श्रद्धालु पहुंचते हैं। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने अपने वनवासकाल का कुछ समय रामगढ़ में बिताया था। यहां 9 दिनों तक मेला लगता है। अष्टमी पर भी हजारों लोग रामगढ़ पहुंचे थे। राम नवमीं पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। पूरे दिन रामगढ़ में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।

30 लाख की चोरी के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर रायपुर के पंडरी स्थित श्री शिवम कपड़ा शोरूम में 30 लाख की चोरी के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार हुए हैं। इनमें से एक आरोपी शोरूम का ही कर्मचारी था। जो चेहरा छिपाने के लिए बुर्का पहनकर शोरूम के भीतर घुसा था। आरोपी ने अपने मामा और दोस्तों के साथ मिलकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। फिलहाल इस मामले में क्राइम ब्रांच और सिविल लाइन पुलिस ने 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है, जिसमें आरोपी बुर्का पहने हुए साफ नजर आ रहा है। आरोपी जब चोरी के बाद शोरूम की छत से रस्सी के सहारे नीचे उतर रहा था, तभी दूसरे मंजिल पर रस्सी अचानक टूट गई और आरोपी धड़ाम से नीचे गिर गया। जिससे उसका पैर टूट गया। शोरूम के बाहर लगे सीसी टीवी में आरोपी अपने साथी के कंधे के सहारे चलकर लंगड़ाते हुए दिखाई दिया। तब पुलिस को आरोपी के पैर में चोट की बात पता चली। क्राइम ब्रांच की टीम ने जांच पड़ताल के दौरान वहां काम कर रहे कर्मचारी के बारे में पता लगाया। तभी शोरूम के भीतर कैश काउंटर के पास ड्यूटी करने वाले राजेश टंडन से पूछताछ की गई। राजेश का पैर टूटा हुआ था। पुलिस को उस पर शक हुआ। आरोपी की मोबाइल लोकेशन वारदात के दिन शोरूम के आसपास की पाई गई। कड़ी पूछताछ के बाद आरोपी ने सच्चाई कबूल की। आरोपी राजेश ने बताया कि उसने अपने मामा परमेश्वर बघेल और सुरेश कुमार दीवान के साथ मिलकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। साथ ही उसका एक दोस्त मोहनीश श्रीवास्तव भी इसमें शामिल था। शोरूम के भीतर केवल राजेश ही घुसा था। बाकी आरोपी बाहर गाड़ियों में इंतजार कर रहे थे। राजेश जब जमीन पर गिरा तो साथी उसे उठाकर कंधे के सहारे कार में लेकर गए। पुलिस ने चारों चोरों के पास से करीब 17 लाख रुपये कैश, 2 कार और 1 एक्टिवा, 1 पल्सर और 4 मोबाइल जब्त किए हैं। जब्त सामान की कुल कीमत 23 लाख रुपये है। इस मामले म ेंए एसपी रायपुर ग्रामीण कीर्तन राठौर का कहना है कि पुलिस आरोपियों को रिमांड में लेकर बची हुई रकम की रिकवरी के लिए पूछताछ करेगी। यह पूरी घटना 31 मार्च और 1 अप्रैल के दरमियानी रात की है। चोर शोरूम के भीतर करीब 9.30 बजे दाखिल हुआ। फिर मौका देखकर वहां के स्टोर रूम में छिप गया। चोर शोरूम का ही कर्मचारी था, इसलिए उसने खुद को बुर्का से ढक लिया था, जिससे कोई पहचान न पाए। जब पूरा शोरूम बंद हो गया, कर्मचारी घर चले गए। तो उसने कैश काउंटर को तोड़कर करीब 30 लाख रुपये निकाल लिए। फिर छत के रास्ते फरार हो गया था। हालांकि, पुलिस ने अब पूरे मामले का खुलासा कर लिया है।

नवोदय परीक्षा में खड़गवां से सबसे ज्यादा 20 विद्यार्थी पास हुए, आस्था ने किया टॉप

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र) एमसीबी जिले के 30 विद्यार्थियों ने जवाहर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा 2025 में सफलता हासिल की है। विकासखंड वार देखें तो खड़गवां से सबसे ज्यादा 20 विद्यार्थी सफल हुए हैं। मनेन्द्रगढ़ से 6 और भरतपुर से 4 विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त की है। जिले में आस्था ने टॉप किया है। अन्य सफल विद्यार्थियों में छाया कुमारी साहू, अर्पित चौहान, आशीष कुमार सिंह, नैतिक सागर और रोहन मरावी शामिल हैं। साथ ही अन्नू, सोहानी मिश्रा, पवन चतुर्वेदी, अनुरुद्ध पाण्डेय और सौम्या ने भी परीक्षा पास की है। अरुणा, कृष्णिका, अनुप्रिया जायसवाल, साक्षी, इशान साहू, आयुष साहू और अन्नया भारती भी सफल विद्यार्थियों में शामिल हैं। समीर, शालिनी, लवकुमार, दुर्गावती, अक्षन्त कुमार, संजना, अंश कुमार, प्रतिभा सिंह, सुलजीत, प्रियांशु और बुद्धम ने भी यह परीक्षा पास की है। जिला शिक्षा अधिकारी अजय कुमार मिश्रा ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि यह सफलता शिक्षकों के अथक परिश्रम और विद्यार्थियों की मेहनत का परिणाम है। उन्होंने आशा जताई कि आने वाले सालों में और अधिक विद्यार्थी इस परीक्षा में सफल होंगे। इस उपलब्धि से जिले में खुशी का माहौल है।

एनकाउंटर का डर...दूसरे राज्य भाग रहे नक्सली

मीडिया ऑडीटर, रायपुर केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने रायपुर में एंटी नक्सल ऑपरेशन को लेकर बैठक ली। अफसरों ने शाह को बताया कि अब नक्सली अपनी लोकेशन बदल रहे हैं। दूसरे राज्यों में भी भाग रहे हैं। छत्तीसगढ़ में बीते 1 साल में हमारी फोर्स नक्सलियों को जंगलों में ढूंढ़कर एनकाउंटर कर रही है। इन बातों को सुनने के बाद शाह ने बैठक में कहा कि एक राज्य से दूसरे राज्य में भाग रहे नक्सलियों को पकड़ने के लिए राज्य पुलिस और केन्द्रीय सुरक्षा एजेंसियां आपस में कोआर्डिनेशन को बढ़ाएं। खुफिया इनपुट पर काम करने को शाह ने आई बी के अधिकारियों को भी निर्देश दिए।

ये बैठक शनिवार रात रायपुर के एक रिसॉर्ट में आयोजित की गई थी। इसमें प्रदेश के सी एम विष्णुदेव साय और गृहमंत्री विजय शर्मा शामिल थे। राज्य सरकार ने इस बैठक में अब तक के ऑपरेशन नक्सल सरेंडर और योजनाओं के बारे में भी शाह को बताया। अमित शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ में विकास और सुरक्षा दोनों ही मोर्चों पर प्रगति संतोषजनक हुई है। उन्होंने छत्तीसगढ़ प्रशासन से नक्सल प्रभावित इलाकों में सरकारी योजनाएं जन-जन तक पहुंचाने के लिए बनाई गई 'नियद नेल्लानार' को सुरक्षा बलों के शिविरों के 5 किलोमीटर के दायरे से बढ़ाकर 10 किलोमीटर करने को कहा। शाह ने यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की जनता को विकास के समान अवसर मिले। केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि नक्सल विरोधी अभियान का मोमेंटम किसी भी सूरत में कम नहीं होना चाहिए। बैठक में शाह ने अफसरों से कहा कि नक्सलवाद को खत्म करके 31 मार्च 2026 के दिन को ऐतिहासिक बनाना है। ये वो दिन होगा जब छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में नक्सलवाद एक इतिहास बन जाएगा। नक्सलवाद के कारण कई पीढ़ियां बर्बाद हो गई हैं। उन्होंने कहा कि नक्सलवाद फिर से जड़ न जमा पाए इसलिए इसका समूल नाश आवश्यक है। गृह मंत्री ने यह भी कहा कि नक्सलियों के खिलाफ जारी लड़ाई को बिखरने नहीं देना है। एक राज्य से दूसरे राज्य में भाग रहे नक्सलियों को पकड़ने के लिए राज्य पुलिस और केन्द्रीय सुरक्षा एजेंसियां में समन्वय और बेहतर होना चाहिए।

रावण के साथ जैसा हुआ, वैसा नक्सलियों के साथ कर रहे

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (निप्र)। पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के एनकाउंटर पर कहा कि, पुरातन काल में प्रभु श्रीराम ने जैसा रावण के साथ किया था, वैसा ही सरकार अब नक्सलियों के साथ कर रही है। सिंहदेव ने कहा कि पहले शांति वार्ता की कोशिश, फिर हथियार का जवाब हथियार से देना राजतंत्र की पुरानी नीति है। श्रीराम ने भी वहीं किया था। सरकार भी ऐसा ही कर रही है। टीएस सिंहदेव का यह बयान 5 अप्रैल को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के छत्तीसगढ़ के बस्तर प्रवास के बाद आया है। टीएस सिंहदेव ने नक्सलियों के एनकाउंटर को लेकर कहा कि, ये सदियों से चली आ रही नीति है। यह आज के सरकार की, कोई कांग्रेस या भाजपा सरकार की नीति नहीं है। कोई भी राजतंत्र यही करता है। पुरातन में रामचंद्र जी ने क्या किया। टीएस सिंहदेव ने कहा कि, भगवान श्रीराम ने पहले रावण को संदेश भेजा होगा, समझाया होगा कि मुख्य धारा में आओ, शांति वार्ता करो, लेकिन रावण ने हरण किया। दानव ऋषि मुनियों के यज्ञों को भंग करते थे। मना करने के बाद भी उनका यही रवैया रहता था। इसके बाद श्री रामचंद्र जी ने शस्त्र उठाया और रावण का वद्य किया। सिंहदेव ने कहा कि, आज सरकार भी वहीं काम नक्सलियों के साथ कर रही है। सरकार ने भी नक्सलियों के साथ पहले शांति वार्ता करने का प्रयास किया। उन्हें मुख्य धारा में लौटने कहा, लेकिन उन्होंने हथियार उठाया। ऐसे में हथियार का जवाब हथियार से देना पड़ रहा है। समय सीमा पर टीएस ने उठाया था सवाल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने एक साल में दक्षिण छत्तीसगढ़ से नक्सलियों के खात्मे का दावा किया था तो दिए गए टाइमलाइन को लेकर टीएस सिंहदेव ने कहा था कि, इस समय सीमा की बाध्यता में बेगुनाह न मारे जाएं, इसका ख्याल रखा जाना चाहिए। बस्तर में नक्सलियों के खिलाफ हो रही लगातार कार्रवाई पर टीएस सिंहदेव ने पूर्व में केंद्र और राज्य सरकार की तारीफ भी की थी।

रामनवमी पर रामलला का सूर्य तिलक हुआ

अयोध्या (एजेंसी)। रामनवमी पर अयोध्या में रामलला का जन्मोत्सव मनाया गया। जन्म के बाद उनका अभिषेक किया गया। रविवार दोपहर करीब 12 बजे अभिजीत मुहूर्त में रामलला का सूर्य अभिषेक हुआ। करीब 4 मिनट रामलला के मस्तक पर सूर्य किरणें पड़ीं। सूर्य तिलक के बाद रामलला की आरती की गई। सूर्य तिलक से पहले कुछ देर के लिए रामलला के पट बंद कर दिए गए और गर्भगृह की लाइट बंद कर दी गई। शाम करीब साढ़े 6 बजे सरयू घाट पर दीपोत्सव शुरू किया गया। ऐसा पहली बार है, जब अयोध्या में रामनवमी पर दीपोत्सव किया गया। अयोध्या में इस समय करीब 5 लाख श्रद्धालु हैं। राम जन्मभूमि परिसर में लंबी लाइनें लगी हैं। राम मंदिर के बाहर एक किमी लंबी लाइन लगी है। इससे पहले, सुबह 9.30 बजे रामलला को पंचामृत से स्नान कराकर श्रृंगार किया गया। रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड पर हाउसफुल जैसे हालात हैं। गर्मी को देखते हुए राम पथ, भक्ति पथ, धर्म पथ और राम जन्मभूमि पथ पर श्रद्धालुओं के लिए रेड कारपेट बिछाई गई है। ड्रोन से श्रद्धालुओं पर सरयू जल छिड़का गया। जगह-जगह शेड बनवाए गए हैं।

हरियाणा के शहीद फ्लाइट लेफ्टिनेंट की मंगेतर दिल्ली में टीचर

रेवाड़ी (एजेंसी)। जगुआर क्रैश में शहीद हुए हरियाणा के फ्लाइट लेफ्टिनेंट सिद्धार्थ यादव के अंतिम संस्कार के समय मंगेतर सानिया का वीडियो सामने आया है। इसमें वह सिद्धार्थ के पार्थिव शरीर रखे बॉक्स से लिपटी हुई हैं। वह सिद्धार्थ के सिर की तरफ रखी फोटो से पूछती हैं- बेबी, तू आया नहीं मेरे लिए, तू तो बोलके गया था, मैं आऊंगा तुझे लेने। इस दौरान वह बॉक्स को खटखटाती हुई भी नजर आ रही हैं। यह वीडियो उस वक्त का है, जब सिद्धार्थ की पार्थिव देह रेवाड़ी के सेक्टर-18 स्थित नए घर में पहुंची थी। इस दौरान एयरफोर्स के जवानों और परिजनों ने सानिया को वहां से हटाया। सिद्धार्थ की 10 दिन पहले ही सानिया से सगाई हुई थी। वह दिल्ली के प्राइवेट स्कूल में टीचर हैं। चंद दिनों में सिद्धार्थ से वह इतनी अटैच कैसे हो गईं, जिससे सिद्धार्थ के परिवार वाले भी हैरान हैं।

केरल-आंध्र समेत 8 राज्यों में आंधी-बारिश के आसार

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज देश के कई हिस्सों में मौसम करवट लेगा। भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक राजस्थान, गुजरात में लू का असर बना रहेगा। साथ ही मध्य प्रदेश, दिल्ली और पंजाब समेत 6 राज्यों के कुछ हिस्सों में भी गर्मी बढ़ेगी। वहीं केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, असम और मेघालय समेत 8 राज्यों में बारिश और तेज हवाएं चलने के आसार हैं। इन इलाकों में 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी आ सकती है और बिजली गिरने की भी संभावना है। इधर, राजस्थान में गर्मी तेज होनी शुरू हो गई है। बाड़मेर जिले में पारा 43 डिग्री सेल्सियस के पार चला गया।

भाषा विवाद के बीच पीएम का तमिलनाडु सरकार पर निशाना

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और केंद्र सरकार के बीच नई शिक्षा नीति और ट्रायलैंग्वेज को लेकर विवाद चल रहा है। इस बीच प्रधानमंत्री मोदी रविवार को रामेश्वरम पहुंचे। इस दौरान सीएम स्टालिन न ही उन्हें रिसीव करने पहुंचे और न ही कार्यक्रम में पहुंचे।

पीएम मोदी ने रामेश्वरम में एशिया के पहले वर्टिकल लिफ्ट रेलवे ब्रिज और और अन्य योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया। जनसभा के दौरान उन्होंने भाषा विवाद का जिक्र किए बिना डीएमके नेताओं और सीएम एमके स्टालिन को नसीहत दे दी। पीएम ने कहा- मैं राज्य सरकार से मांग करता हूं कि वे डॉक्टरी की पढ़ाई तमिल भाषा में कराएं। प्रधानमंत्री ने कहा कि तमिलनाडु के कई नेताओं की चिट्ठियां मेरे पास आती हैं। आश्चर्य की बात है कि कोई नेता तमिल में सिग्नेचर नहीं करता। तमिल का गौरव बने, इसलिए इन लोगों को स्थानीय भाषा में सिग्नेचर करना चाहिए।

डीएमके सरकार हिंदी को लागू नहीं करना चाहती तमिलनाडु सरकार पिछले दो महीने से नई शिक्षा नीति के तहत राज्य में ट्राय लैंग्वेज पॉलिसी लागू करने का विरोध कर रही है। पॉलिसी के तहत तमिल, अंग्रेजी के अलावा हिंदी को भी शिक्षा के माध्यम में शामिल करने का प्रस्ताव है। डीएमके चीफ और सीएम स्टालिन इसका विरोध कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने रामेश्वरम मंदिर में दर्शन किए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को रामनवमी पर तमिलनाडु के रामेश्वरम स्थित रामनाथ स्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना की। प्रधानमंत्री 3 दिन के श्रीलंका दौरे से सीधे रामेश्वरम पहुंचे। श्रीलंका से लौटते हुए मोदी ने विमान से रामसेतु देखा। उन्होंने इसका वीडियो भी पोस्ट किया है। मोदी ने लिखा- श्रीलंका से लौटते हुए विमान से रामसेतु के दर्शन किए। यह तभी हुआ, जब अयोध्या के राम मंदिर में रामलला का सूर्य तिलक हो रहा था। यह दिव्य अनुभव था। प्रभु श्रीराम हम सभी को जोड़ने वाली शक्ति हैं।

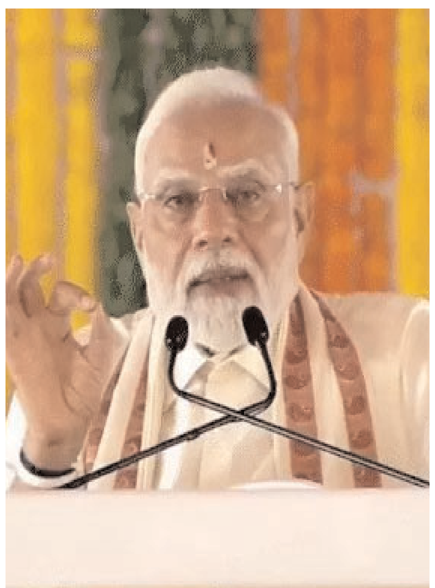

उनकी कृपा सदैव हम पर बनी रहे। पीएम ने कहा- आज भी देखिए कितना सुखद संयोग है। रामनवमी का पवित्र दिन है, रामेश्वरम की धरती है। यहां पर पम्बन ब्रिज का उद्घाटन हुआ। 100 साल पहले जिसने यह ब्रिज बनाया, वह गुजरात में पैदा हुआ था। आज नए ब्रिज का जिसने उद्घाटन किया उसका जन्म भी गुजरात में हुआ है। साथियों, आज जब राम नवमी है। रामेश्वर की पवित्र भूमि है। तब मेरे लिए भावुक पल भी है। आज भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस है। विकसित और समृद्ध भारत का जो लक्ष्य हम लेकर चल रहे हैं, उसमें एक-एक कार्यकर्ता का काम है। तीन-चार पीढ़ियां इसमें खप गई हैं। भाजपा के इस विचार ने आज हमें ये काम करने का मौका दिया है। आज के देश के लोग भाजपा सरकार में गुड गवर्नेंस देख रहे हैं। आज हर हिंदुस्तानी का सीना चौड़ा हो रहा है। साथियों, देश के हर राज्य, हर कोने में भाजपा कार्यकर्ता जिस तरह जमीन से जुड़कर काम करते हैं। गरीबों की सेवा करते हैं। उसे देखकर मुझे गर्व होता है। मैं उन्हें अपनी शुभकामनाएं देता हूं। उनका आभार व्यक्त करता हूं।

पीएम ने रामेश्वरम में नए पम्बन ब्रिज का उद्घाटन किया

रामेश्वरम (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को तमिलनाडु के रामेश्वरम में एशिया के पहले वर्टिकल लिफ्ट स्पैन रेलवे ब्रिज (नए पम्बन ब्रिज) का उद्घाटन किया। 2.08 किमी लंबे ब्रिज की नींव नवंबर 2019 में मोदी ने ही रखी थी। भाषा विवाद के कारण तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन कार्यक्रम में नहीं आए। ब्रिज रामेश्वरम (पम्बन द्वीप) को भारत की मुख्य भूमि तमिलनाडु के मंडपम से जोड़ता है। प्रधानमंत्री मोदी ने ही नवंबर 2019 में इसकी नींव रखी थी। भविष्य को ध्यान में रखते हुए इसे डबल ट्रैक और हाई-स्पीड ट्रेनों के लिए डिजाइन किया गया है।

राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद वक्फ बिल बना कानून

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने वक्फ (संशोधन) बिल को शनिवार देर रात मंजूरी दे दी। सरकार ने नए कानून को लेकर गजट नोटिफिकेशन जारी किया। अब नए कानून को लागू करने की तारीख को लेकर केंद्र सरकार अलग से एक नोटिफिकेशन जारी करेगी। यह बिल (अब कानून) 2 अप्रैल को लोकसभा और 3 अप्रैल को राज्यसभा में 12-12 घंटे की चर्चा के बाद पास हुआ था। नए कानून को लेकर सुप्रीम कोर्ट में अब तक छह याचिकाएं दाखिल हो चुकी

हैं। नई याचिका केरल के सुन्नी मुस्लिम संगठन केरल जमीयतुल उलेमा ने दायर की है। वहीं, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने 11 अप्रैल से पूरे देश में विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा की है। इससे पहले कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद, एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी, आप विधायक अमानतुल्लाह खान, सिविल राइट्स संगठन एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स और जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी अलग-अलग याचिका लगा चुके हैं। इस पर केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि इस कानून का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों में हो रहे पक्षपात, दुरुपयोग और अतिक्रमण को रोकना है। इस बिल (अब कानून) को राज्यसभा में 128 सदस्यों ने समर्थन दिया था।

कर्नाटक हाईकोर्ट बोला- देश में यूसीसी लागू होना जरूरी

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक हाईकोर्ट ने शनिवार को कहा कि देश में यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू होना बहुत जरूरी है। इससे सभी नागरिकों को (खासकर महिलाओं को) बराबरी का हक मिलेगा। कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकारों से अपील की है कि वे मिलकर ऐसा कानून बनाएं। यह टिप्पणी जस्टिस हंचाटे संजीव कुमार की सिंगल जज बेंच ने एक पारिवारिक संपत्ति विवाद के मामले में की। यह मामला मुस्लिम महिला शहनाज बेगम की मौत के बाद उनकी संपत्ति के बंटवारे को लेकर था, जिसमें उनके भाई-बहन और पति के बीच विवाद हुआ। कोर्ट ने इस मामले के बहाने मुस्लिम पर्सनल लॉ पर सवाल उठाए और कहा कि ये कानून महिलाओं के साथ भेदभाव करता हैं। कोर्ट ने कहा कि हिंदू कानून में बेटियों को पैतृक संपत्ति में बराबरी का अधिकार है, जबकि मुस्लिम कानून में भाई को मुख्य हिस्सेदार और बहन को कम हिस्सेदार माना जाता है, जिससे बहनों को कम हिस्सा मिलता है। कोर्ट ने कहा कि ये असमानता संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) के खिलाफ है। कोर्ट ने बताया कि गोवा और उत्तराखंड जैसे राज्य पहले ही ष्टष्ट की ओर कदम बढ़ा चुके हैं।

अनंत अंबानी ने 170 किमी की पदयात्रा पूरी की

गुजरात (एजेंसी)। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरपर्सन मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी ने रविवार को अपनी 170 किमी की पदयात्रा पूरी की। अनंत तड़के श्री द्वारकाधीश मंदिर पहुंचे। अपनी यात्रा के समापन पर अनंत अंबानी ने भगवान द्वारकाधीश के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ' यह मेरी अपनी आध्यात्मिक यात्रा है। मैंने इसे भगवान का नाम लेकर शुरू किया था और उनका नाम लेकर ही इसे समाप्त करूंगा। मैं भगवान द्वारकाधीश को धन्यवाद देना

चाहता हूं।' 10 अप्रैल को अनंत अंबानी का जन्मदिन है। अनंत अपना 30वां जन्मदिन द्वारका में ही मनाएंगे। अनंत ने अपनी यात्रा 28 मार्च को जामनगर के मोती खावड़ी से शुरू की थी। लोगों को ट्रैफिक और सिक्योरिटी के चलते मुश्किल से बचाने के लिए अनंत ज्यादातर रात में यात्रा करते थे। नीता अंबानी ने अपने बेटे की इस आध्यात्मिक यात्रा पर कहा, 'एक मां के लिए यह बहुत गर्व की बात है। मेरा बेटा अनंत द्वारकाधीश के इस पवित्र स्थान तक अपनी पदयात्रा पूरी करने में सफल रहा।' अनंत ने अपनी यात्रा कई स्वास्थ्य समस्याओं के बावजूद पूरी की। उन्हें कशिंग सिंड्रोम मोटापा, अस्थमा और सांस लेने में कठिनाई जैसी तकलीफ है। यात्रा के दौरान उन्होंने हनुमान चालीसा, सुंदरकांड और देवी स्तोत्र का भी जाप किया था।

बिलासपुर-बीकानेर एक्सप्रेस में लगी आग

उज्जैन (एजेंसी)। उज्जैन के पास तराना में बिलासपुर-बीकानेर एक्सप्रेस (20846) ट्रेन में आग लग गई। आग ट्रेन के एसएलआर (जनरेटर डिब्बे) में लगी। धुआं उठने से अफरा-तफरी मच गई। आग लगने के बाद का वीडियो भी सामने आया है। जिसमें कुछ लोग कोच के कांच फोड़ कर और पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि, कुछ देर बाद आग वाले कोच को अलग कर गाड़ी को रवाना कर दिया गया। तराना रोड स्टेशन मास्टर ने बताया कि आग बुझा ली गई है। किसी भी यात्री को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। आग लगने की सूचना मिलते ही ग्रामीण भी मौके पर पहुंच गए। ग्रामीण मुकेश रावल ने बताया कि ट्रेन में आग उस समय लगी जब वो काली सिंध नदी के ब्रिज पर थी। इस दौरान रेलवे के कर्मचारियों के साथ मिलकर पावर कोच में लगी आग को बुझाने के लिए पानी और अन्य साधनों से प्रयास किए। रेलवे पीआरओ खेमराज मीणा ने बताया कि ट्रेन बीकानेर से चलकर बिलासपुर जा रही थी। शाम करीब 5-30 बजे तराना रोड स्टेशन से पहले ट्रेन के पावर कोच में आग लगी। इसके बाद ट्रेन से इस डिब्बे को अलग कर दिया गया।

शाह का तीन दिन का जम्मू-कश्मीर दौरा

श्रीनगर (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह आज रविवार (6 अप्रैल) से तीन दिन के जम्मू-कश्मीर दौरे पर रहेंगे। इस दौरे में वे स्न्ष्ट पर बनी चौकियों पर जाकर हालात का जायजा लेंगे, सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा करेंगे और विकास कार्यों पर बैठक करेंगे। जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन की सरकार बनने के बाद यह गृहमंत्री शाह का पहला दौरा है। शाह सबसे पहले रविवार शाम जम्मू पहुंचेंगे, जहां वे सबसे पहले राजभवन में उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से मुलाकात करेंगे। इसके बाद शाह भाजपा के प्रदेश मुख्यालय में जाएंगे। जहां वे बीजेपी विधायकों और पदाधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। सोमवार को, गृहमंत्री कठुआ जिले में बीएसएफ की सीमा चौकी विनय का

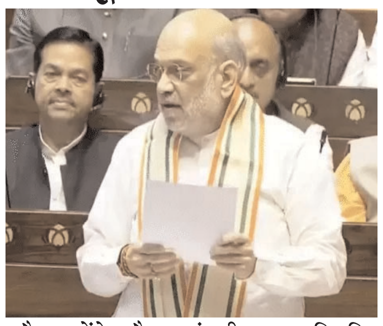

दौरा करेंगे और वहां की सुरक्षा स्थिति की जानकारी लेंगे। सोमवार को ही वे जम्मू-कश्मीर पुलिस के शहीद जवानों के परिवारों से मिलेंगे और कुछ को नौकरी के नियुक्ति पत्र भी देंगे। यह कार्यक्रम राजभवन, जम्मू में होगा। मंगलवार (8 अप्रैल) को गृहमंत्री , श्रीनगर स्थित राजभवन में बैठक करेंगे।

वक्फ बोर्ड में सुधार की जरूरत, विधेयक पारित होना इस दिशा में ठोस कदम, बोले बिहार के राज्यपाल

पटना (एजेंसी)। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शनिवार को कहा कि वक्फ बोर्ड के कामकाज में काफी सुधार की जरूरत है और संसद द्वारा वक्फ (संशोधन) विधेयक पारित करने से यह संभव हो पाएगा। यहां एक समारोह के इतर पत्रकारों से बात करते हुए खान ने कहा कि पटना में कई वक्फ बोर्ड हैं लेकिन उनमें से कोई भी अनाथालय या अस्पताल का संचालन नहीं करता है। आरिफ मोहम्मद खान ने कहा, ''वक्फ बोर्ड के कामकाज में काफी सुधार की जरूरत है। संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित वक्फ (संशोधन) विधेयक इस दिशा में एक ठोस कदम है। राज्यपाल ने कहा, ''ऐसा कहा जाता है कि वक्फ की संपत्ति अल्लाह की है... लेकिन इसके विपरीत बोर्ड के लोग मुकदमे लड़ने में व्यस्त हैं।

राहुल गांधी बिहार के बेगूसराय में कांग्रेस के मार्च में शामिल होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि वह बिहार के बेगूसराय जायेंगे और युवाओं के साथ मिलकर उनकी समस्याएं उजागर करेंगे तथा इस साल राज्य में होने वाले विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को सत्ता से हटाएंगे।

रविवार को 'एक्स' पर एक वीडियो संदेश में उन्होंने कहा, ''बिहार के युवा साथियों, मैं सात अप्रैल को 'पलायन रोको, नौकरी दो' मार्च में आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए बेगूसराय आ रहा हूं।''

कांग्रेस नेता ने कहा कि इसका उद्देश्य पूरी दुनिया को बिहार के युवाओं की भावना, उनके संघर्ष और उनकी पीड़ा से अवगत कराना है। राहुल ने कहा, ''आप भी सफेद टी-शर्ट पहनकर आएं, सवाल पूछें और अपने अधिकारों के लिए सरकार पर दबाव बनाने और उसे (सत्ता से) हटाने के लिए आवाज उठाएं।''

उन्होंने 'सफेद टी-शर्ट मुहिम' में शामिल होने के लिए लिंक भी साझा किया। उन्होंने कहा, ''आइये, हम सब मिलकर बिहार को अवसरों का राज्य बनाएं।'' बिहार में इस साल सितंबर-अक्टूबर में चुनाव होने हैं।

सऊदी अरब ने खास दोस्त सहित 14 देशों के लिए बंद किए वीजा दरवाजे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सऊदी अरब ने भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मिस्र सहित 14 देशों के यात्रियों पर अस्थायी वीजा प्रतिबंध लगा दिया है। यह फैसला हज से पहले उमराह, बिजनेस और फैमिली वीजा को प्रभावित करेगा। सऊदी अधिकारियों के मुताबिक, यह रोक 13 अप्रैल के बाद लागू होगी और हज सीजन के खत्म होने यानी मध्य जून तक जारी रहेगी। प्रतिबंध हटने के बाद वीजा प्रक्रिया दोबारा शुरू होगी।पिछले साल 2024 के हज के दौरान भीषण गर्मी और भीड़भाड़ की वजह से 1,000 से ज्यादा यात्रियों की मौत हो गई थी। इनमें बड़ी संख्या में ऐसे लोग शामिल थे जो बिना आधिकारिक रजिस्ट्रेशन के हज में पहुंचे थे। इस बार सऊदी सरकार कोई जोखिम नहीं लेना चाहती। यही वजह है कि क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के निर्देश पर वीजा नियमों को सख्त किया गया है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मिस्र, इंडोनेशिया, इराक, नाइजीरिया, जॉर्डन, अल्जीरिया, सूडान, इथियोपिया, ट्यूनीशिया और यमन के यात्रियों के लिए वीजा अस्थायी रूप से बंद कर दिए गए हैं।

बीते वित्त वर्ष में पश्चिम बंगाल के जीएसटी संग्रह में वृद्धि राष्ट्रीय औसत से अधिक -ममता

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को कहा कि राज्य अपने संसाधन जुटाने के प्रयासों में लगातार प्रगति कर रहा है और उसने वित्त वर्ष 2024-25 में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह में 11.43 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की है, जो राष्ट्रीय औसत से दो प्रतिशत अधिक है। बनर्जी ने कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 में पश्चिम बंगाल का जीएसटी संग्रह पिछले वर्ष की तुलना में 4,808 करोड़ रुपये अधिक रहा। बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पश्चिम बंगाल अपने संसाधन

जुटाने के प्रयासों में लगातार प्रगति कर रहा है, जो वित्त वर्ष 2024-25 के अंत में संकलित वित्तीय परिणामों से स्पष्ट है। 2024-25 में हमने पिछले वर्ष की तुलना में 4,808 करोड़ रुपये अधिक जीएसटी जुटाया है, जो 11.43 प्रतिशत की वृद्धि है। यह राष्ट्रीय स्तर (9.44 प्रतिशत वृद्धि) से दो प्रतिशत अधिक है और हमारी बढ़ती आंतरिक वित्तीय ताकत को दर्शाता है।''

मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजीकरण और स्टाम्प शुल्क के मामले में संपत्ति बैनामा की संख्या में साठ हजार की वृद्धि हुई है, जो हमारे बाजार की गतिशीलता को दर्शाता है।'' उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में, 2024-25 में संग्रह पिछले वर्ष की तुलना में 1,908 करोड़ रुपये अधिक रहा है, जो 31.05 प्रतिशत की वृद्धि है।

बनर्जी ने कहा, ''यह सब दिखाता है कि हम आत्मनिर्भरता और वित्तीय अनुशासन में विश्वास करते हैं, और हमारा प्रशासन बंगाल के लोगों के कल्याण के लिए राज्य के वित्त को सुव्यवस्थित करने को लेकर गंभीर है।

भाजपा का 46 वां स्थापना दिवस

नड्डा बोले- भाजपा जो कहती है वो करती है, कामयाबी के साथ अतीत को भी याद रखना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी आज अपना 46वां स्थापना दिवस बना रही है। इस मौके पर पार्टी अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में भाजपा का झंडा फहराया। इसके बाद उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा- सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को कामयाबी के साथ-साथ अपने अतीत को भी याद रखना होगा। हमें अपने पुराने कार्यकर्ताओं से संवाद जारी रखना है, उनसे मिलना है, उन्हें समझना है। उन सभी के संघर्ष से आज पार्टी विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनी है।

नड्डा ने आगे कहा- हमने राममंदिर बनाने का वादा किया तो पूरा किया। धारा 370 खत्म करने का वादा किया तो पूरा किया। भाजपा जो कहती है वो करती है। यही वजह है कि हमारी राज्यों में सरकारें लगातार रिपीट हो रही है। उत्तराखंड, हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में बार-बार जनता का विश्वास हम पर बना हुआ है। इस बार दिल्ली में भी हमारी 2.5 दशक बाद सरकार आई है। दरअसल, भाजपा के 46 वें स्थापना दिवस पर भाजपा के सभी राज्य मुख्यालयों और जिला मुख्यालयों में कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। भाजपा के नेता जगह-जगह पार्टी का झंडा फहरा रहे हैं। साथ ही कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है।

तीन तलाक को समाप्त करना ऐतिहासिक कदम -

हमने हमेशा राष्ट्र को हर चीज से ऊपर रखा है, किसी व्यक्ति या विशेष हितों के पक्ष में काम नहीं किया है। शाहबानो मामले में राजीव गांधी सरकार मुस्लिम समुदाय के कुछ वर्गों के दबाव में आकर तुष्टीकरण की राजनीति में फंस गई थी। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने तीन तलाक को समाप्त करके ऐतिहासिक कदम उठाया, जिससे मुस्लिम महिलाओं को सशक्त और स्वतंत्र बनाया गया। भाजपा का कोई संस्थापक सदस्य मिले, तो कृपया उसके घर जाएं- हम एक जन-आधारित पार्टी हैं। मैं अपनी पार्टी के लोगों से अनुरोध करता हूं कि जब आप किसी भी बूथ पर जाएं और आपको जनसंघ का कोई सदस्य या भाजपा का कोई संस्थापक सदस्य मिले, तो कृपया उसके घर जाएं। वक्फ बोर्ड की संपत्ति मुस्लिम समाज के लिए- हम वक्फ बोर्ड को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य बस यह सुनिश्चित करना है कि इसे प्रबंधित करने वाले लोग कानून के दायरे में काम करें और स्थापित नियमों का पालन करें। वक्फ बोर्ड की संपत्ति और धन मुस्लिम समुदाय के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित किया जाएगा।

आरसीबी के खिलाफ मुंबई इंडियंस से जुड़ेंगे जसप्रीत बुमराह

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अगले हफ्ते से खेलते हुए दिख सकते हैं। दरअसल, बुमराह को आखिरकार सेंटर ऑफ एक्सीलेंस से आईपीएल खेलने की मंजूरी मिल गई है। तेज गेंदबाज मुंबई इंडियंस की टीम से अगले कुछ दिन में जुड़ने वाले हैं।

फिलहाल बुमराह इस समय मुंबई में ही हैं। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह जनवरी में सिडनी में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच के दौरान चोटिल हो गए थे। जिस कारण से वह तब से मैदान से बाहर हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आरसीबी के खिलाफ सात अप्रैल को होने वाले मुकाबले से पहले जसप्रीत बुमराह मुंबई इंडियंस से जुड़ सकते हैं। हालांकि, वानखेड़े में होने वाले मैच में उनके खेलने की उम्मीद नहीं है। बुमराह ने मुंबई के लिए शुरुआती चैर मैच नहीं खेले हैं। इससे पहले इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज से भी वह बाहर थे। इसके अलावा हाल ही में चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली स्क्वॉड का भी वह हिस्सा नहीं थे। रिपोर्ट के अनुसार, बुमराह को मैच फिट घोषित करने से पहले कुछ मैच सिमुलेसन से गुजरना होगा। जसप्रीत बुमराह 13 अप्रैल को दिल्ली कैपिटल्स और मुंबई इंडियंस के बीच होने वाले मुकाबले में वापसी कर सकते हैं।

इस युग में द्रविड़ सर जैसे खिलाड़ी का साथ होना सौभाग्य की बात

मुंबई (एजेंसी)। भारत के पूर्व मुख्य कोच और राजस्थान रॉयल्स के मेंटर (मार्गदर्शक) राहुल द्रविड़ की देखरेख में खेल रहे बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने कहा कि इस युग में उनके जैसा सहानुभूति के साथ देखभाल करने वाला इंसान का साथ मिलना सौभाग्य की बात है। भारतीय टेस्ट टीम के मुख्य सलामी बल्लेबाज जायसवाल राजस्थान रॉयल्स के प्रमुख खिलाड़ी हैं। उन्होंने अपने करियर पर द्रविड़ के प्रभाव के बारे में पूर्व भारतीय दिग्गज को बेहतरीन इंसान और खिलाड़ी करार दिया।

जायसवाल ने कहा, 'वह एक बेहतरीन इंसान हैं। इस युग में द्रविड़ सर जैसे खिलाड़ी का होना सौभाग्य की बात है। जायसवाल ने बताया कि द्रविड़ एक इंसान के तौर पर किस तरह दूसरों से अलग हैं। 'मुझे लगता है कि वह एक बेहतरीन 'लीडर है। वे एक शानदार सहायक और देखभाल करने के साथ हमेशा सभी का ख्याल रखने वाले इंसान है। वह खिलाड़ियों में आत्मविश्वास भरते हैं, उन्हें भरोसा दिलाते हैं कि वे सही जगह पर हैं। वह सही मार्गदर्शन देते हैं, जो व्यक्तिगत करियर और पूरी टीम दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। द्रविड़ के साथ कोई भी बातचीत सीखने का मौका है। जायसवाल ने कहा, उनके करीब रहना सीखने का मौका है। यह सीख न केवल क्रिकेट के बारे में, बल्कि मैदान के बाहर उनके व्यवहार के बारे में भी है। उन्होंने वर्षों से इतनी शालीनता और संयम दिखाया है। उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है।

हार से इसलिए निराश नहीं हैं अय्यर

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में शुरुआती जीत के बाद हार का सामना करने वाली पंजाब किंग्स के कप्तान श्रेयस अय्यर निराश नहीं है। अय्यर ने कहा कि अच्छा हुआ शुरुआत में ही टीम को ये हार मिल गयी। इससे टीम जाएगी और आगे के मैचों के लिए शानदार वापसी करेगी। . राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ तीसरे मुकाबले में पंजाब किंग्स की टीम दबाव का सामना नहीं कर पायी और 50 रनों से हार गयी। अय्यर ने हार के बाद कहा, 'मुझे लगा कि हम इस मैच में 180-185 रन से ज्यादा नहीं देंगे पर ऐसा हुआ नहीं। हमने इससे कुछ ज्यादा रन दे दिए। हम योजना के अनुसार नहीं खेल पाए राहत की बात ये है कि यह हार शुरुआत में ही मिल गयी है।' अय्यर ने कहा, 'यह केवल तीसरा मैच है। आपको शुरुआत में थोड़ी परेशानी होती पर उसके बाद ही टीम जागती है। शुरुआत में ऐसा होना आगे होने से अच्छा है। हम वापस जाकर अपनी रणनीति पर काम करेंगे और अगले मैच में मजबूत वापसी करेंगे।' इस हार से आईपीएल में कप्तान के तौर पर अय्यर की लगातार जीत का सिलसिला भी रुक गया है।

पाकिस्तानी खिलाड़ी खुशदिल की फैन से हुई हाथापाई, अब पीसीबी दे रहा सफाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेटर खुशदिल शाह इस समय काफी चर्चा में हैं। दरअसल, खुशदिल शनिवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए मैच के बाद फैन से भिड़ गए। दोनों के बीच जमकर लड़ाई और गाली गलौच हुई। नौबत यहां तक आ गई की दोनों के बीच हाथापाई हो गई। मैदान पर मौजूद पाकिस्तानी खिलाड़ियों और अधिकारियों ने दोनों को अलग किया और लड़ाई को शांत कराया। लेकिन इस हैरान करने वाले वीडियो का वायरल होने में देर नहीं हुई। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच माउंड माउंगनुई में तीसार वनडे मैच खेला गया। इस मैच में पाकिस्तान को 43 रनों से हार झेलनी पड़ी। इसी बीच खुशदिल शाह और फैंस के बीच हाथापाई हो गई। पाकिस्तान को इस सीरीज में 0-3 से हार का सामना करना पड़ा।

इस लड़ाई का वीडियो काफी वायरल हो रहा है। खुशदिल शाह और फैन के बीच जुबानी जंग हो रही है। फैन काफी दूर से खुशदिल शाह को कुछ कह रहा है। वहीं खुशदिल उनको मारने दौड़ पड़ते हैं। तभी सिक्योरिटी गार्ड खुशदिल को रोकते हैं। वहीं फैन को दो लोग दूर ले जाते हैं और मैदान के बाहर भी।

वहीं अब इस मामले पर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बयान जारी किया है। जिसमें बोर्ड ने अपने खिलाड़ी का बचाव किया है। पीसीबी ने बयान में लिखा है कि, पाकिस्तान क्रिकेट टीम मैनेजमेंट विदेशी दर्शक द्वारा हमारे राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी के खिलाफ की गई गाली-गलौच वाली भाषा की निंदा करता है। मैच के दौरान दर्शक ने खिलाड़ी पर अभद्र टिप्पणी की थी। जब पाकिस्तान के खिलाफ नारे लगाए गए तब खुशदिल शाह ने इसका विरोध किया। साथ ही बयान में आगे कहा गया है कि, इसके जवाब में अफगानिस्तान के इस दर्शक ने पश्तो में और ज्यादा गलत भाषा का इस्तेमाल करते हुए मामले को बढ़ाया। पाकिस्तान टीम द्वारा शिकायत किए जाने पर स्टेडियम के अधिकारियों ने मामले में दखल दिया और दर्शक को बाहर भेजा।

धोनी के रिटायरमेंट पर हेड कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने दिया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स की लगातार तीन हार के बाद सोशल मीडिया पर फैंस बेहद नाराज हैं। फैंस लगातार एमएस धोनी के संन्यास को लेकर कयास लगा रहे हैं। वहीं इस दौरान फैंस धोनी को जमकर ट्रोल भी कर रहे हैं। आईपीएल के 18वें सीजन में अब तक चेन्नई ने 4 मुकाबले खेले हैं जिसमें से उसे सिर्फ एक में जीत जबकि तीन में हार झेलनी पड़ी है। वहीं अब टीम की हार और धोनी के रिटायरमेंट पर हेड कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने बड़ा बयान दिया है। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में एमएस धोनी 7वें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे। जहां उन्होंने 26 गेंदों पर एक

छक्का लगाकर नाबाद 30 रन की पारी खेली। हालांकि, धोनी अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाए और सीएसके को हार मिली। धोनी के रिटायरमेंट पर फ्लेमिंग ने कहा कि मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

मैं अभी भी उनके साथ काम करने का लुत्फ उठा रहा हूं और वो अभी भी काफी मजबूत हैं। मैं इन दिनों उनके भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं पूछता। बता दें कि, सीएसके और दिल्ली के बीच खेले गए मैच में दिल्ली ने पहले बल्लेबाजी करते हुए केएल राहुल की 77 रन की पारी के दम पर 20 ओवर में 6 विकेट पर 183 रन बनाए थे, लेकिन फिर चेन्नै ने विजय शंकर की नाबाद अर्धशतकीय पारी के बावजूद 20 ओवर में 5 विकेट पर 158 रन ही बना पाई।

सीएसके का किला फतह करने के बाद डीसी के कप्तान अक्षर पटेल का बयान, कहा-सोचा नहीं था इतनी आसानी से जीत मिलेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली कैपिटल्स ने आईपीएल 2025 में जीत की हैट्रिक लगा दी है। दिल्ली ने शनिवार को चेन्नई सुपर किंग्स को 25 रन से हराया। डीसी ने चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में 184 रनों का लक्ष्य रखने के बाद चेन्नई को हावी होने का मौका नहीं दिया। वहीं 16 साल बाद दिल्ली ने पहली बार सीजन की शुरुआती तीन मैचों में जीत दर्ज की है। दिल्ली ने 2009 में भी ऐसा किया था। सीएसके को धूल चटाते ही डीसी के कप्तान अक्षर पटेल ने बयान। इस दौरान उन्होंने कहा कि सोचा नहीं था कि इतनी आसानी से जीत मिलेगी। दिल्ली कैपिटल्स वर्सेस चेन्नई सुपर किंग्स मैच के बाद जब अक्षर से लगातार तीन जीत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि, सोचा नहीं था कि इतनी आसानी से जीतेंगे। सभी खिलाड़ियों ने योगदान दिया। टीम का संतुलन अच्छा लग रहा। बतौर कप्तान तीन मैचों में से तीन जीतना अच्छा एहसास है। टीम मीटिंग में इम्पैक्ट डालने के बारे में ही बातचीत होती है जो बेहद अहम है। अक्षर पटेल ने सीएसके के सामने ज्यादा गेंदबाजी नहीं कर पर कहा कि, मैं खुद को बचा रहा था। मेरी उंगली भी चोटिल है। मैं गेंदबाजी करना चाहता था लेकिन जोखिम नहीं लेना चाहता था क्योंकि ये एक लंबा टूर्नामेंट है। अक्षर ने महज एक ओवर डाला और पांच रन खर्च किए। उन्होंने आगे कहा कि, हमने अच्छी शुरुआत की है लेकिन आईपीएल एक लंबा टूर्नामेंट है। मोमेंटम कभी भी बदल सकता है।

सीएसके की हार के बाद एमएस धोनी पर फूटा फैंस का गुस्सा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल का 18वां सीजन अब तक पांच बार की चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स के लिए अच्छा नहीं रहा है। चेन्नई सुपर किंग्स को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में 25 रन से हार झेलनी पड़ी है। सीएसके की ये लगातार तीसरी हार है। वहीं सीएसके की हार के बाद टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज एमएस धोनी को सोशल मीडिया पर फैंस जमकर ट्रोल कर रहे हैं। धोनी इस मुकाबले में सातवें नंबर पर उतरे और 26 गेंदों में नाबाद 30 रन बनाए, जिसमें एक चौका और एक सिक्स शामिल है। सीएसके ने चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में

184 के लक्ष्य का पीछा करते हुए 74 रनों पर पांच गंवा दिए थे। ऐसे में धोनी 11वें ओवर में बल्लेबाजी करने आए। धोनी से फैंस को ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की उम्मीद थी लेकिन वह रंग में नजर नहीं आए। उन्होंने विजय शंकर के साथ छठे विकेट के लिए 84 रन की अटूट साझेदारी की। दिल्ली कैपिटल्स ने 15 साल बाद चेपॉक स्टेडियम में पहली बार जीत हासिल की है।

सीएसके द्वारा इस शर्मिंदगी का सामना करने पर उनके फैंस भड़क गए। 43 वर्षीय धोनी को सोशल मीडिया पर बुरी तरह ट्रोल किया जा रहा है।

पीएसजी ने बिना किसी हार के 13वीं बार फ्रांसीसी लीग का खिताब जीता

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) ने अपना अजेय अभियान जारी रखते हुए शनिवार को यहां एंजर्स को 1-0 से हराकर छह मैच शेष रहते हुए ही फ्रांसीसी फुटबॉल लीग (लीग 1) का खिताब अपने नाम पर सुरक्षित किया। पीएसजी का यह लीग 1 में 13वां खिताब है और इस तरह से उसने अपने ही रिकॉर्ड में सुधार किया। उसकी यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने चैंपियन बनने की राह तक एक भी मैच नहीं गंवाया।

ट्रॉफी अपने नाम पर सुरक्षित करने के लिए उसको एंजर्स के खिलाफ केवल ड्रॉ की जरूरत थी लेकिन युवा स्ट्राइकर डेसिरे डौए के गोल की मदद से उसने जीत के साथ जश्न मनाया। मैच समाप्त होने के बाद पीएसजी के खिलाड़ियों ने कोच लुई एनरिक को कंधों पर उठा लिया।

पीएसजी की यह 28 मैच में 23वीं जीत है और उसने दूसरे स्थान पर काबिज मोनाको पर 24 अंक की बड़ी बढ़त हासिल कर ली है। पीएसजी के 74 और मोनाको के 50 अंक हैं। मोनाको को एक अन्य मैच में ब्रेस्ट ने 2-1 से हराया। पीएसजी ने अपने अभियान में अभी तक 80 गोल किए हैं जबकि उसने केवल 26 गोल खाए हैं।

भारत को फुटबॉल में प्रगति के लिए ट्रेनर की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए-एडमिल्सन

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्राजील के 2002 विश्व कप विजेता जोस एडमिल्सन का मानना ??है कि भारत को फुटबाल में प्रगति के लिए अपने ट्रेनर की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए और युवा खिलाड़ियों की महत्वाकांक्षाओं को भी देखना चाहिए।

एडमिल्सन रियाल मैड्रिड और एफसी बार्सिलोना के उन स्टार खिलाड़ियों में शामिल हैं जो रविवार को डीवाई पाटिल स्टेडियम में 'लीजेंड्स फेसऑफ' में खेलेंगे। इसमें कार्लोस पुयोल, लुइस फिगो, जावी, जेवियर साविओला, रिवाल्डो, फर्नांडो मोरिएंटेस, माइकल ओवेन और कई अन्य खिलाड़ी खेलते नजर आएंगे। मैच से पहले यहां आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में एडमिल्सन ने कहा, ''एक अच्छा फुटबॉल खिलाड़ी बनने की तकनीक हासिल करने से पहले कई तरह की चीजों से निपटना होता है। भारत को ट्रेनर की शिक्षा पर

ध्यान देना होगा और बच्चों की महत्वाकांक्षाओं पर भी ध्यान देना होगा। '' पूर्व ब्राज़ीलियाई खिलाड़ी ने एक अनुवादक के माध्यम से कहा, ''एक अच्छा खिलाड़ी बनाने से पहले उन्हें एक अच्छा इंसान बनाना होगा। और यह बहुत महत्वपूर्ण है। कई जगहों पर बच्चे खिलाड़ी बनने का सपना देखते हैं। लेकिन इससे पहले समाज की कई समस्याओं का समाधान करना होगा। '' पेपे ने कहा कि अर्जेंटीना के सुपरस्टार लियोनेल मेसी की तुलना में पुर्तगाल टीम के उनके साथी क्रिस्टियानो रोनाल्डो डिफेंडर के रूप में मुश्किल खिलाड़ी थे। उन्होंने अनुवादक के माध्यम से कहा, ''मुझे क्रिस्टियानो रोनाल्डो का नाम लेना होगा क्योंकि मैं उनके साथ ट्रेनिंग करता हूं। मुझे पता है कि उनके खिलाफ कितना मुश्किल है। '' उन्होंने कहा, ''क्रिस्टियानो एक ऐसे फुटबॉलर रहे हैं जिन्होंने संघर्ष किया है और रियाल मैड्रिड को बहुत कुछ दिया है। उन्होंने मैनचेस्टर युनाइटेड, युवेंटस, पुर्तगाली राष्ट्रीय टीम को बहुत कुछ दिया है। उन्होंने हमेशा बहुत सारे मैच जीते हैं। मुझे पता है कि उनके साथ ट्रेनिंग करना कैसा होता है। उन्होंने बहुत मेहनत की है। ''

अर्जेंटीना के सावियोला रियाल मैड्रिड और बार्सिलोना दोनों के लिए खेले हैं। उन्होंने कहा कि वह भारतीय प्रशंसकों के सामने खेलने के अवसर से उत्साहित हैं। सावियोला ने कहा, ''इस प्रतिद्वंद्विता को भारतीय प्रशंसकों के सामने लाने का मौका बहुत भावनात्मक है। भले ही मैं अब पेशेवर नहीं हूं, लेकिन मैं कभी भी फुटबॉल से दूर नहीं रहता। मुझे उम्मीद है कि यह मैच भारतीय फुटबॉलरों और सपने देखने वालों की एक पूरी नई पीढ़ी को प्रेरित करेगा। '' स्पेन की राष्ट्रीय टीम के पूर्व खिलाड़ी मोरिएंटेस ने कहा, ''जब भी रियाल मैड्रिड बार्सिलोना का सामना करता है तो हमेशा प्रतिस्पर्धा होती है।

धूमधाम से मनाई गई रामनवमीं, भगवान श्रीराम का हुआ आकर्षक श्रृंगार और पूजा-अर्चना, देवी मंदिरों में रही भीड़

मीडिया ऑडीटर, रीवा / सतना (निप्र)। चैत्र नवरात्रि की नवमी धूम धाम से मनाई गई। जहां रामनवमी पर श्री राम भगवान का जन्मोत्सव का उत्साह शहर भर में दिखाई दिया। राम मंदिरों में भक्ति भाव के साथ धार्मिक आयोजन आयोजित किए गये । दोपहर 12 बजते ही मंदिरों में राम जन्मोत्सव मनाया गया। जहां ढोल नगाड़े की धुन पर लोग जमकर थिरकते नजर आए। रीवा के राम हर्षण कुंज के बाहर लोग भक्ति भाव में जमकर झूमते नजर आए, जहां सुबह से भगवान राम के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। पंडितों और जानकारों का कहना है कि इस बार रामनवमी का पर्व रवि पुष्य नक्षत्र के संयोग से और भी विशेष है। श्री राम मंदिरों को सजाया गया है। भगवान का आकर्षक श्रृंगार किया है।

शहर के पीटीएस स्थित राम हर्षण राम मंदिर और किला मार्ग पर स्थित राम जानकी मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे, भक्तों में भारी उत्साह देखने को मिला। यहां धार्मिक भजनों पर भक्ति भाव में भक्त झूम रहे हैं। जहां भगवान श्री राम के दरबार का मनोहारी श्रृंगार किया गया है।

राम हर्षण मंदिर परिसर में स्थित श्री राम मंदिर पर भगवान को आकर्षक रूप से सजाया है। देवालयों में जय-जय श्री राम की गूंज का उद्घोष हो रहा है। रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में रामनवमी का पर्व मनाया गया।

पंडित अखंडानंद उपाध्याय ने बताया कि इस दिन पुष्य नक्षत्र दिन व रात में रहेगा। मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए अलग-अलग प्रकार के अनुष्ठान भक्तों द्वारा किए जाते हैं।

रामनवमी का यह उत्साह आज रात तक जारी रहने वाला है। जहां जगह जगह पर भंडारे, शोभा यात्रा और धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे।

सीएम डॉ. मोहन यादव ने किए मां शारदा के दर्शन, हुआ रोड शो

पारंपरिक पोशाक में नजर आए; कहा- आल्हा-ऊदल के लिए सालभर का कार्यक्रम बनेगा

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को रामनवमी के अवसर पर अपने मैहर प्रवास के दौरान शारदा माता के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। माता के दर्शन के बाद सीएम ने नगर में रोड शो किया, जहां नागरिकों ने पुष्प वर्षा कर उनका भव्य स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने मैहर में विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इसके बाद जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने बुंदेलखंड की वीरता और संस्कृति की सराहना की। उन्होंने आल्हा गायकों की विशेष रूप से तारीफ करते हुए कहा,हमारे पुरखों की जान है आल्हा। बुंदेलखंड वीरों की धरती है। आल्हा ने कभी शरीर नहीं छोड़ा, उनके जीवन ने देशभक्ति की प्रेरणा दी।

सीएम ने आल्हा मंडली को 50,000 की आर्थिक सहायता देने के निर्देश दिए। साथ ही आदेश दिया कि प्रशासन सालभर आल्हा पर केंद्रित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करें, जिसका सारा खर्च सरकार देगी। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा है कि "मैहर का लोक" तैयार कर आल्हा की विरासत को जन-जन तक पहुंचाया जाए, जिससे यह परंपरा राष्ट्रीय पहचान प्राप्त कर सके।

प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ और घोषणाओं की चर्चा की

सीएम डॉ. यादव ने जनसभा में कहा कि दुनिया का कोई देश ऐसा नहीं जो मोदी जी का स्वागत करने को आतुर न हो। उन्होंने कश्मीर से धारा 370 हटाकर देश को एक नई दिशा दी है। उन्होंने बताया कि धान पर 4,000 का बोनस दिया जा रहा है और चुनाव पूर्व की गई घोषणाएं तेजी से पूरी की जा रही हैं।

मुख्यमंत्री ने शराबबंदी को महिला सशक्तिकरण से जोड़ते हुए कहा, शराब बुरी चीज है, यह परिवार को तोड़ती है। शराबबंदी महिलाओं की मांग है और यह उनके लिए ही है। अब दूध बिक रहा है, देश में दूध की नदियां बह रही हैं। उन्होंने कहा कि लाड़ली बहना योजना के तहत महिलाओं को उद्योग और रोजगार से जोड़ा गया है, जिससे आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला है।

सिंचाई, ऊर्जा और औद्योगिक विकास का संकल्प: सीएम ने प्रदेश की सिंचाई क्षमता बढ़ाने के लिए कहा कि बरगी डैम से नर्मदा नदी का पानी मैहर तक लाया जाएगा। आने वाले 5 वर्षों में 1 करोड़ हेक्टेयर भूमि सिंचित की जाएगी और 32 लाख सोलर पंपों के माध्यम से बिजली आपूर्ति होगी। उन्होंने मैहर में बड़ी गौशाला, कलेक्टर भवन, घुनवारा सड़क निर्माण, और औद्योगिक विकास की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि राज्य में वर्तमान औद्योगिक विकास दर 12% है, जिसे और आगे बढ़ाया जाएगा।

जिप्सी में किया रोड शो: सीएम पारंपरिक पोशाक धोती-कुर्ते में नजर आए। उन्होंने मां शारदा के दर्शन कर पूजा अर्चना कर प्रदेशवासियों की खुशहाली की कामना की। इसके बाद सीएम भाजपा स्थापना दिवस के मौके पर भाजपा युवा मोर्चा द्वारा आयोजित रैली में भी शामिल हुए। जिप्सी में सवार हो कर वे रोड शो में निकले। इस दौरान जगह जगह उनका स्वागत किया गया। सड़क के दोनों तरफ खड़े हो कर आम जनता ने शराबबंदी के लिए सीएम का अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री यादव रविवार दोपहर करीब 2 बजे रीवा से हेलिकॉप्टर से मैहर पहुंचने के बाद सबसे पहले त्रिकूट पर्वत स्थित मां शारदा मंदिर पहुंचे। यहां उन्होंने दर्शन कर पूजा-अर्चना की।

बकछेरा गांव में सिलेंडर फटने से 6 लोग घायल

5 को प्राथमिक इलाज के बाद मिली छुट्टी, एक 8 वर्षीय बच्ची के हाथ-पैर झुलसे, एसजीएमएच में भर्ती

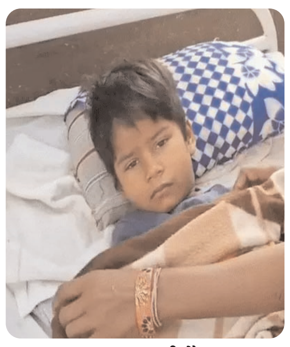

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बकछेरा गांव में सिलेंडर फटने से 6 लोग घायल हो गए। घटना रविवार की है। हालांकि सभी की हालत स्थिर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक जिले के सगरा थाना अंतर्गत ग्राम बकछेरा में खाना बनाते समय एक घर में सिलेंडर फट गया। सिलेंडर फटने से 6 लोग चपेट में आ गए।

डॉक्टर्स के मुताबिक घायलों में से पांच को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया है। लेकिन साक्षी बंसल नाम की एक छोटी बच्ची गंभीर रूप से झुलस गई है। जिसके हाथ और पैर झुलस गए हैं। जिसे तुरंत संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां डॉक्टरों की टीम उसका इलाज कर रही है।

साक्षी की मां राजकली बंसल ने बताया कि यह घटना उस वक्त हुई जब दोपहर में वे खाना बना रही थीं। साक्षी बंसल(8) भी पास में ही खड़ी थी। तेज धमाके के साथ सिलेंडर फट गया, जिससे घर में मौजूद सभी लोग घायल हो गए। बच्ची की गंभीर हालत को देखते हुए डॉक्टरों की टीम लगातार उसकी निगरानी कर रही है। परिजनों ने बताया है की बच्ची की हालत में सुधार है। जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है। उनमें सौरभ बंसल,आकांक्षा बंसल,सूरज बंसल शामिल हैं।

कई दिनों तक प्रताड़ना झेलने के बाद फरियाद लेकर युवक पहुंचा एसपी ऑफिस

बच्चे का फॉर्म रिजेक्ट होने से नाराज हुये एसएएफ जवान ने ऑनलाइन दुकान संचालक को थप्पड़ जड़े

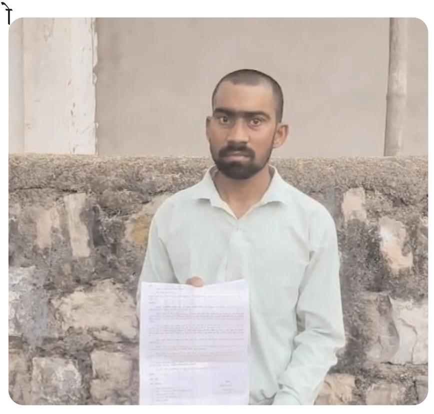

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। ऑनलाइन दुकान संचालक के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। जहां एक युवक ने न सिर्फ गाली-गलौज की बल्कि दुकान में घुसकर हाथापाई भी की। पूरी घटना सीसीटीवी में रिकॉर्ड हुई है। युवक खुद को एसएएफका जवान बताता है और धमकी देते हुए कहता है कि "मेरे लिए कलेक्टर कॉल करते हैं, तू मेरा स्टैंडर्ड समझ ले।"घटना शहर के कॉलेज चौराहे के पास स्थित एक्सपर्ट ऑनलाइन दुकान की है, जिसे अभिषेक नामदेव नाम का युवक संचालित करता है। मारपीट करने वाले युवक की पहचान विवेक सिंह उर्फ अनुज सिंह के रूप में हुई है, जो खुद को एसएएफ जवान बताता है।

केंद्रीय स्कूल के लिए फॉर्म भरवाया था: बताया गया कि युवक ने केंद्रीय विद्यालय में अपने बच्चे के एडमिशन के लिए ऑनलाइन फॉर्म भरवाया था, लेकिन किसी कारण फॉर्म रिजेक्ट हो गया। इसके बाद युवक ने दुकान संचालक पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए पहले फोन पर गाली-गलौज की और फिर दुकान पहुंचकर हाथापाई की। पीड़ित अभिषेक ने बताया कि यह सिलसिला 28 मार्च से शुरू हुआ। पहले फोन पर गालियां दी गईं, फिर दुकान से जबरन उठाकर ले जाकर मारपीट की गई। 3 और 5 अप्रैल को भी आरोपी दुकान पहुंचा और गाली-गलौज के साथ मारपीट करता रहा।

वीडियो में आरोपी युवक साफ तौर पर खुद को "ईमानदार पुलिसकर्मी" बताते हुए धमकाता नजर आता है। वह कहता है, "मैं करप्ट पुलिस वाला नहीं हूं, मेरे लिए कलेक्टर फोन करता है, तू सोच लेना क्या होगा।"पीड़ित ने अब एसपी ऑफिस पहुंचकर पूरे मामले की शिकायत की है और अपनी जान-माल की रक्षा की गुहार लगाई है। हालांकि, अब तक यह स्पष्ट नहीं सका है कि युवक वास्तव में पुलिस विभाग में कार्यरत है या नहीं।

थाना प्रभारी बोले-जांच की जा रही है: अमहिया थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल का कहना है कि एक फुटेज संज्ञान में आया है। मामले को जांच में लिया गया है। मारपीट करने वाला व्यक्ति कौन है और पूरा मामला क्या है, इसकी जांच की जा रही है। कार्रवाई की जाएगी।

सेमरिया में खेतों में लगी भीषण आग, तीन किसानों की खड़ी फसल जलकर खाक, लाखों का नुकसान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले में गर्मी का सीजन आते ही आग ने अपना कहर बरपाना शुरू कर दिया है। सेमरिया के बेला गांव में रविवार को किसानों की खड़ी गेहूं की फसल देखते ही देखते आग की चपेट में आ गई। ग्रामीणों के मुताबिक आगजनी में किसानों की करीब 5 एकड़ की गेहूं की फसल जलकर खाक हो गई। इस आग में तीन किसानों को नुकसान हुआ है। बताया गया कि घटना के दौरान ग्रामीण, पुलिस और फायर स्टेशन में मदद के लिए फोन लगाते रहे, लेकिन ना तो पुलिस का फोन उठा और ना ही फायर स्टेशन का। ऐसे में ग्रामीणों ने खुद ही मिलकर आग बुझाने की मशक्कत की और आग पर काबू पाया। लेकिन तब तक किसानों की फसल जलकर राख हो चुकी थी। बड़ा गांव स्थित बेला निवासी बुद्धसेन त्रिपाठी, चंद्र प्रताप त्रिपाठी और नारायण पांडे ने बताया कि हमारे खेतों में आग लगने की घटना हुई है। पहले बिजली लाइन में हुई शॉर्ट सर्किट की वजह से खेत में आग लगी, जो देखते ही देखते आसपास के दूसरे खेतों तक जा पहुंची। उन्होंने बताया कि इस घटना में तीन किसानों की तकरीबन पांच एकड़ में लगी गेहूं की खड़ी फसल जलकर खाक हो गई है। शासन प्रशासन को को हमारी मदद करनी चाहिए। हमारे लिए मदद का ऐलान करना चाहिए।

उधर तहसीलदार की माने तो आग कितने क्षेत्रफल में लगी है और आग लगने से कितना नुकसान हुआ है। इसलिए जांच की जा रही है। आग लगने की सूचना मिली है। आग कैसे लगी,अभी कारणों का पता नहीं लग पाया है।

प्रेम-प्रसंग में हत्या, महिला समेत तीन गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले में एक अंधी हत्या का पर्दाफाश करते हुए पुलिस ने शनिवार को एक महिला समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। हत्या की यह वारदात दिल दहला देने वाली है- शराब पिलाकर बेहोश किया गया, फिर शरीर से पत्थर बांधकर कुएं में फेंक दिया गया। ये सब कुछ हुआ एक सोची-समझी साजिश के तहत, जिसमें निजी रंजिश और पुराने रिश्ते मुख्य वजह बने।

मामला 2 अप्रैल को सामने आया, जब जैतवारा के ग्राम बौलिहा बीरन कोठर पासी रोड स्थित एक कुएं में 65 वर्षीय रामकिशोर पटेल का शव बरामद हुआ। रामकिशोर 28 मार्च से लापता थे। जांच में सामने आया कि वह उसी दिन कोटर से सतना लौटे थे और सीधे बिट्टी प्रजापति नामक महिला के घर पहुंचे थे।

बिट्टी ने पहले से योजना बनाकर रामकिशोर को बुलाया था। वह पहले से ही शराब के नशे में था। आरोपियों ने उसे और अधिक शराब पिलाई, खीर-पूड़ी खिलाई और जब वह पूरी तरह बेहोश हो गया तो उसे पासी गांव ले जाया गया। वहां उसे स्प्राइट में ज़हर मिलाकर पिलाने की कोशिश की गई, लेकिन जब वह सफल नहीं हुई तो तीन पत्थर बांधकर उसे कुएं में फेंक दिया गया।

जैतवारा थाना प्रभारी विजय सिंह ने बताया कि आरोपी महिला बिट्टी और मृतक के बीच पहले से जान-पहचान थी। महिला पहले मृतक के घर में किराए से रहती थी। लेकिन जब रामकिशोर की नीयत उसकी बेटी पर खराब हुई, तो उसने घर खाली कर दिया। इसके बाद भी रामकिशोर कभी-कभी मिलने आ जाता था। इससे परेशान होकर महिला ने ब्रम्हजीत चौधरी और सत्यनारायण कुशवाहा के साथ मिलकर हत्या की साजिश रची। पुलिस को इस हत्याकांड को सुलझाने में करीब 100 सीसीटीवी कैमरे खंगालने पड़े। मृतक की अंतिम लोकेशन बिट्टी के घर के पास पाई गई। पूछताछ के दौरान शुरुआत में बिट्टी ने गुमराह करने की कोशिश की, लेकिन सख्ती से की गई पूछताछ में सारा सच सामने आ गया।

पुलिस टीम को मिला इनाम: इस जघन्य हत्याकांड का खुलासा करने वाली पुलिस टीम को सतना पुलिस अधीक्षक द्वारा 10 हजार रुपए का नकद पुरस्कार दिया गया है। टीम में सीएसपी महेन्द्र सिंह चौहान, कोलगवां टीआई सुदीप सोनी, साइबर सेल प्रभारी अजीत सिंह और जैतवारा टीआई विजय सिंह की सराहनीय भूमिका रही।

उप मुख्यमंत्री ने चिरहुला नाथ और मां कालिका के किए दर्शन व पूजा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने प्रभु श्रीराम के जन्मोत्सव श्रीराम नवमी के अवसर पर श्री चिरहुलानाथ स्वामी जी की पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने विप्र सेवा संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुए एवं उपस्थित जनों को श्रीराम नवमी की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री केपी त्रिपाठी, पूर्व महापौर श्री राजेंद्र ताम्रकार एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने पावन पर्व चैत्र नवरात्रि की महाष्टमी के अवसर पर रीवा के रानी तालाब स्थित मां कालिका मंदिर में दर्शन एवं पूजन किया तथा परिसर में आयोजित भक्तिमय सांस्कृतिक आयोजनों में शामिल हुए।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।